सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 • अंक : 5 • 5 अगस्त 2019 • मूल्य : 20 रु.

धूलिया में चातुर्मास प्रवेश पर
पूज्य गुरुदेवश्री

धूलिया में चातुर्मास प्रवेश पर
पूजनीया साध्वीजी

धूलिया चातुर्मास प्रवेश पर
अपार गुरुभक्त

श्रीमती यशोदादेवी
वंसराजजी मंडोवरा
परिवार की
छहरी पालित संघ
हेतु विनंती एवं
मुहूर्त प्रदान

खरतरगच्छ सहस्राब्दी समारोह के अध्यक्ष बने श्री मंगलप्रभातजी लोढा

धूले 11 जुलाई। मुंबई भाजपा अध्यक्ष व विधायक श्री मंगलप्रभातजी लोढा को खरतरगच्छ सहस्राब्दी समारोह का अध्यक्ष घोषित किया गया है। यह घोषणा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने धूलिया नगर में चातुर्मास प्रवेश पर की।

उन्होंने कहा–श्री मंगलप्रभातजी लोढा एक योग्य व्यक्तित्व है। वे पूर्व में गच्छ के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर चुके हैं। उनके नेतृत्व में सहस्राब्दी समारोह का अनूठा आयोजन संपन्न होगा। यह ज्ञातव्य है कि गतवर्ष इन्दौर में खरतरगच्छ के आगेवानों के विशेष अधिवेशन में यह निश्चित किया गया था कि सन् 2022 के फरवरी या मार्च महिने में योग्य स्थान पर सहस्राब्दी समारोह का आयोजन किया जायेगा। श्री मंगलप्रभातजी लोढा ने इस जिम्मेदारी को सहर्ष स्वीकार करते हुए कहा– मैं इस आयोजन को पूर्ण रूप से सफल बनाने हेतु प्रयत्नशील रहूँगा। श्री लोढा महाराष्ट्र प्रदेश विधानसभा के मुंबई क्षेत्र से विधायक है। हाल ही में उन्हें मुंबई भाजपा का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

आगम मंजूषा
भगवान महावीर

चउरंगं दुल्लहं मत्ता संजमं पडिवज्जिया।
तवसा धुयकम्मंसे सिद्धे हवइ सासए॥

चार अंगों (मनुष्यजन्म, शास्त्रश्रवण, धर्म में श्रद्धा और संयम में पुरुषार्थ) को दुर्लभ समझ कर जीव संयम का स्वीकार करता है। फिर तपस्या द्वारा सभी कर्मों को नष्ट कर जीव शाश्वत सिद्धपद प्राप्त करता है।

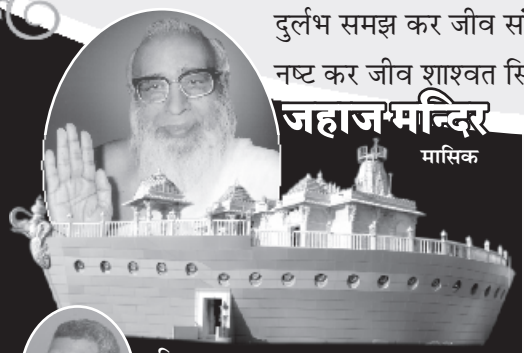

जहाज मन्दिर
मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 अंक : 5 5 अगस्त 2019 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	05
3. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	07
4. गौत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
5. उपवास : आध्यात्मिक और वैज्ञानिक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	10
6. खरतरगच्छ का राजाओं से सम्बन्ध	महोपाध्याय विनयसागरजी	12
7. प्रेरक कथा	कैलाश बी. संकलेचा	15
8. अधूरा सपना	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	16
10. समाचार दर्शन	संकलित	18
11. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	42

पर्वाराधना

18 अगस्त, रविवार	:	अक्षयनिधि तप प्रारंभ
26 अगस्त, सोमवार	:	श्री पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व प्रारंभ
27 अगस्त, मंगलवार	:	प्रवचन के दौरान कल्पसूत्र की बोलियां
28 अगस्त, बुधवार	:	कल्पसूत्र वांचन प्रारंभ,
29 अगस्त, गुरुवार	:	पाक्षिक प्रतिक्रमण, मणिधारी दादाश्री जिन-चंद्रसूरिजी की 853वीं स्वर्गारोहण जयंती,
30 अगस्त, शुक्रवार	:	भगवान महावीर जन्म वांचन एवं सपनाजी की बोलियाँ, महान साधक श्रीमद् देवचंद्रजी म. की पुण्यतिथि
2 सितम्बर, सोमवार	:	सांवत्सरिक महापर्व-मूल बारसा सूत्र वांचन, सांवत्सरिक प्रतिक्रमण

विज्ञापन हेतु हमारे मंत्री कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई
से संपर्क करावें। मो. 094447 11097

नवप्रभात

द्रव्यानुयोगी पूज्यपाद श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज ने अभिनंदन स्वामी के स्तवन में पंक्ति गाई है-

क्युं जाणे क्युं बनी आवशे, अभिनंदन रस रीत!

इस पंक्ति में एक प्रश्न है। इस प्रश्न में अभिलाषा है।

प्रश्न उन्होंने अपने आप से किया है। क्योंकि साधना के क्षेत्र में प्रश्न करने वाला भी मैं हूँ... उत्तर देने वाला भी मैं हूँ... उत्तर पाने वाला भी मैं हूँ और उस उत्तर को अनुभव बनाने वाला भी मैं हूँ।

अनुभव का प्रारंभ प्रश्न से होता है। वह प्रश्न उत्तर, प्राप्ति, प्राप्तकर्त्ता और अनुभव की राहों से गुजर कर अपनी पूर्णता को प्राप्त कर लेता है, जो अन्तर से पैदा होता है।

साधना के क्षेत्र में उत्तर से भी ज्यादा प्रश्न महत्वपूर्ण है। बिना प्रश्न का उत्तर कोई लाभ नहीं पहुँचा पाता। जबकि वही उत्तर जब प्रश्न का होता है तो वह जीवन को ठोस अनुभव दे जाता है।

प्रश्न भी रोम-रोम का चाहिये! चलताऊ प्रश्न फल नहीं दे पाता। केवल बुद्धि से निकला प्रश्न शब्द-जाल है। प्रश्न में हृदय की तीव्र उत्कंठा चाहिये! तीव्र प्यास चाहिये! फिर जो चाहिये, वही दिखाई दे। उससे अलग कुछ नजर न आये।

आंखों को सारे पदार्थ दिखाई देंगे पर हृदय उन्हें स्वीकार नहीं कर पायेगा। उसे तो वही चाहिये, जिसकी झंखना है।

श्रीमद् देवचन्द्रजी ऐसी ही झंखना के साथ प्रश्न कर रहे हैं- ऐसा कब होगा! कैसे मिलेगा वह परम रस! वह अभिनंदन स्वामी का अनुभव भरा परम रस! मुझे कब मिलेगा... कैसे मिलेगा...!

प्रभो! तेरे परम रस की चर्चा मैंने सुनी है। उस चर्चा ने मेरी प्यास को चरम स्पर्श दिया है। अब मिटाना है उस प्यास को!

और तभी जैसे परमात्मा की देशना प्रखर हुई।

पुद्गल अनुभव त्याग थी, करवी जसु परतीत।

तुम परम रस को पाना चाहते हो। तेरे पास ही है, कहीं जाने की जरूरत नहीं है। पुद्गल के अनुभव की आसक्ति को दूर कर... तुम्हें परम रस की प्रतीति होगी। मात्र पुद्गल का त्याग करने से वह रस नहीं मिलने वाला। तुम्हें उसके अनुभव का त्याग करना होगा। अर्थात् उसके प्रति जो राग-द्वेष का अनुभव है, उसका त्याग करना होगा।

फिर जो परम रस प्रकट होगा, उसे भर-भर पीना... प्रतिपल पीना...!

सोलह सतियाँ
कथानक
11

विलक्षण वैराग्यवती सती द्रौपदी

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

आतुरता से प्रतीक्षा कर रही दुर्योधन की आँखों को द्रौपदी के आते ही जैसे विश्राम मिला-आओ मेरे मन की मलिके! प्राणों के एक-एक तार में अपूर्व संगीत और माधुर्य को भरने वाली प्राणेश्वरी द्रौपदी का इस भव्य संसद कक्ष में भाव भरा स्वागत है। तुम्हें देखने को मेरे नयन तरस गये। अब तो जैसे तपती मरुभूमि में सावन की ठण्डी फुहार बरसी। अब विलम्ब न करो। शीघ्र ही मेरे सूने, फीके, सूखे जीवन को अपने सौन्दर्य, सुरभि और साहचर्य से नूतन उपवन में बदल दो।

दुर्योधन का अनर्गल प्रपाल सुनकर द्रौपदी के होंठ फड़कने लगे। आँखों में लालिमा उतर आयी। पहले ही संवाद में खरी फटकार लगाती हुई द्रौपदी बोली-कौरवकुलकलंक! तेरी निर्लज्जता तो पहले भी देखी-सुनी है पर आज तो तेरी बुद्धि का दीवाला ही निकल गया है, जो कुलवृद्धों की मर्यादा का उल्लंघन करता हुआ शराबी की तरह बकता जा रहा है।

याद रखना, ज्येष्ठ भातृजाया पर कुदृष्टि रखने वाला कुत्ते की मौत मरता है। उसके नाम पर आने वाली पीढ़ियाँ-शताब्दियाँ थूं थूं करती हुई नाम लेना भी पसंद नहीं करती है।

द्रौपदी की फटकार सुनकर दुर्योधन की मुट्ठियाँ भिंच गयी। द्रौपदी पुनः मुखर हुई-दुर्योधन ! तूं नहीं जानता कि परायी नारी पर आँख उठाना विनाश को आमन्त्रित करना है। क्या तुझे रावण की दुर्गति याद नहीं?

कुटिल हँसी हँसता हुआ दुर्योधन बोला-द्रौपदी! तूं सही कह रही है पर तूं मेरे लिये परायी नार नहीं, मेरी अपनी प्रिया अतिप्रिया, सुप्रिया है।

भरी सभा में परायी नारी को अपना कहते तुझे संकोच भी कहाँ है?मुझ पर अधिकार जताने का और पाने का सामर्थ्य तो विश्व के अद्वितीय धनुर्धर अर्जुन में ही था। याद करो स्वयंवर के उन पलों को जब राधावेध के लिये तुमने अपनी किस्मत परखी थी पर तुझमें स्वयं की प्रतिभा को तोलने की भी बुद्धि कहाँ थी, अन्यथा भरी सभा में भारी जनमेदिनी के बीच अपनी इज्जत को यों धूमिल नहीं करता।

द्रौपदी ऽऽऽ ! दुर्योधन चीख उठा ।

सच हमेशा ही कड़वा होता है गांधारीपुत्र ! तुम आज मुझ पर अधिकार जताते हो तो क्या उस दिन तुम्हारी बुद्धि घास चरने चली गयी थी या शक्ति वाष्प बनकर उड़ गयी थी, जो आज इस प्रकार की घिनौनी बात कर रहे हो।

एक-एक शब्द ने दुर्योधन के मन पर गहरा वार किया पर किसी भी तरह स्वयं को संभालता हुआ बोला-द्रौपदी ! अतीत एक शव से अधिक कुछ भी नहीं। उसे न तो सहेजा जाता है, न याद किया जाता है। स्वीकार्य तो हमेशा वर्तमान ही होता है और आज मैंने तुझे पा लिया है। तेरे और मेरे बीच में आने वाले हर रोड़े को समाप्त करने के लिये मैं कृतसंकल्प हूँ।

द्रौपदी सोचने लगी कि आखिर कारण क्या है जो कुलवृद्धों और पांच पतियों के बीच दुर्योधन इतनी अश्लीलता से पेश आ रहा है।

तनिक हैरानी भरे लहजे में वह बोली-यह तो बताओ दुर्योधन ! आखिर द्रौपदी तुम्हारी कब और कैसे हुई, जब मैं स्वप्न में भी तुम्हारी कामना नहीं करती।

अहं से उछलता हुआ दुर्योधन बोला-आज से और अभी से। जब से मैंने पाण्डुपुत्रों को द्युतक्रीड़ा में हराकर तुम्हें हासिल किया है, तब से तुम मेरे जीवन की निधि बन गयी हो।

तुम्हारे षड़यंत्र को मैं बखूबी जानती हूँ। द्रौपदी बोली।

ओहो! मेरी जीत को तुम कपट कहती हो। अरे! सैंकड़ों व्यक्तियों के बीच द्युत क्रीड़ा हुई। दिव्य पाशों के प्रभाव से मैं हर बार जीता, पाण्डुपुत्र हारे । धन, साम्राज्य

को हारने के बाद वे तुम्हें भी हार बैठे।

हाँ! तुम इसे चालाकी समझो, धूर्तता या माया कहो पर सच सबके सामने है और यह दिन के उजाले की भाँति स्पष्ट है कि तुम मेरी हो चुकी हो। द्रौपदी की आँखों में जैसे अन्धेरा छाने लगा। धरती कांपती हुई प्रतीत होने लगी। तत्काल जिनेश्वर परमात्मा का ध्यान धरती हुई स्वयं को संभाला।

द्रौपदी ने कुछ पल राजसभा में गहरी खामोशी छा गयी। द्रौपदी सम्पूर्ण घटनाक्रम को समझकर मनोमन कह उठी-ओह! आदमी जब-जब भोगों की तृष्णा का शिकार बनेगा, तब-तब अपमानजनक पराजय के कड़वे घूंट पीने ही पड़ेंगे ।

देखो तो सही ! लोभ की मार से पाण्डु पुत्र भी नहीं बच पाये। द्युतक्रीड़ा का परदा उनकी विवेक की आँख के आगे अंधेरा बिछा गया और वे सोच न सके। सारी सम्पदा को दाँव लगाने पर भी सीख न मिली, यहाँ तक कि एक खिलौना या स्वर्ण का टुकड़ा समझकर पांचाली को भी दाँव पर लगा बैठे। अरे ! इतना तो सोचते कि मुझमें भी जीव है, मैं सुख-दु:ख के संवेदनों से मुक्त तो नहीं कि इस तरह एक खरीद ले और दूसरा बेच दे।

तभी उसकी सोच का आधार बदला-अरे ! मैं भी यह क्या सोच रही। मेरी पीड़ा से उन्हें अवश्य ही पीड़ा हो रही होगी। जब हमारे भविष्य पर खतरा मण्डरा रहा है, तब मुझे तनिक धैर्य, धर्म-आस्था, शील-दृढ़ता और आत्म-प्रज्ञा के द्वारा आशाओं को जीवन्त रखना चाहिये।

अन्तर्जगत से बाह्य जगत में प्रविष्ट होती हुई द्रौपदी संयत शब्द शैली में अभिव्यक्त हुई-दुर्योधन ! यह सच है कि उन्होंने मुझे हारा है, पर मैंने उन्हें नहीं। फिर हार-जीत से ऊपर जीवन के कुछ नैतिक एवं मानवीय मूल्य भी तो होते होंगे।

द्रौपदी! आदर्शों के ढ़ोल पीटने से न तो जीवन चलता है, न सुख मिलता है। ये सब ग्रन्थों और सन्तों की बातें हैं। गृहस्थ जीवन में इनका कोई मूल्यांकन नहीं हो सकता।

दुर्योधन! तुम बिल्कुल गलत कह रहे हो। यदि पारस्परिक मर्यादा, लोक-लाज, विनय-व्यवहार और अनुशासन नहीं रहेगा तो न पति-पत्नी में पारस्परिक प्रेम और समर्पण हो सकता है, न पिता-पुत्र में विनय और अनुशासन ! इसलिये नैतिक नियम तो वह बाड है, जो संस्कारों की फसल को असंयम के आवारा पशुओं से बचाती है। द्रौपदी ने अपनी दलील प्रस्तुत की।

खैर! जो भी हो, पर मेरे मन में तुझे पाने की जो मुराद थी, वह पूरी हो गयी। अब तुम जल्दी से मेरे जीवन में बसंती बयार बनकर आओ। मेरा हृदय तुम्हें पाने को तरस रहा है।

दुर्योधन ! तुझ पर मोह और अविवेक का उन्माद छाया हुआ है। ठीक यही होगा कि तुम अपनी भाभी, हस्तिनापुर की महारानी से निश्छल स्नेह पाओ।

पर तुमने भी तो देवर के प्रति अपने औचित्य को न समझा, न निभाया। जरा याद करो अभिमन्यु के जन्मोत्सव के दिन को।

तत्क्षण द्रौपदी की आँखों के सामने घूम गया सुभद्रा पुत्र अभिमन्यु का जन्म-बधाई उत्सव !

उस दिन की रौनक कुछ निराली....अनोखी! विशाल पैमाने पर आयोजित था वह भव्य समारोह।

राजभवन भी अनूठा! उसकी बनावट, शिल्प-सौन्दर्य भी सबसे जुदा। ऐसा विचित्र कि कोई कल्पना भी न कर सके। जहाँ स्थल दृष्टिगोचर हो रहा है, वहाँ जल है और जहाँ जल दृष्टिगत हो रहा है, वहाँ शुष्क स्थल है।

दुर्योधन भी उस कार्यक्रम में आमंत्रित था। उसे क्या पता था कि आज इस विचित्र भूल भूलैया में वह भ्रमित हो जायेगा।

उस भव्य भवन में प्रवेश किया तो लगा कि चारों ओर पानी ही पानी गिरा हुआ है। वस्त्र कहीं भीग न जाये, इसलिये हाथ से उसे ऊपर उठाया और आगे बढ़ने लगा। उसका आश्चर्य बढ़ गया क्योंकि दिख रहा था पानी, और था बिल्कुल शुष्क स्थल। यह कैसा आश्चर्य!

कुछ कदमों की दूरी पार की कि उसे लगा कि शुष्क स्थल आ गया। अपना धौतवस्त्र हाथ से छोड़कर चंचल भाव से चलने लगा कि पाँव फिसला और दुर्योधन पानी में गिर पड़ा। जैसे तैसे उठकर उसने अपने आपको संभाला।

बात यहीं पूरी नहीं हुई। हुआ यों कि पानी में गिरते दुर्योधन को देखकर सारी सभा हँस पड़ी, उससे भी ज्यादा अपमान तो तब हुआ, जब पाँच पतियों से घिरी पांचाली उन्मुक्त भाव से हँसती हुई व्यंग्य कस गयी-प्रियतम! देखो तो सही! अंधे का पुत्र अंधा ही होता है। (क्रमश:)

गुरु स्मृति
65

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

पूज्यश्री के सामने हमारी जिज्ञासा ने प्रश्न प्रस्तुत किया– गुरुदेव! आर्वी नगर में संपन्न हुए उपधान तप की पत्रिका हमारी आंखों के सामने है। उस पत्रिका में उदयपुर चातुर्मास से लेकर आर्वी तक का सारा वर्णन प्रकाशित है। चातुर्मास की पूर्णाहुति के पश्चात् आपश्री का किन क्षेत्रों में विहार हुआ, किन क्षेत्रों में रूकना हुआ, कहाँ क्या क्या कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, कहाँ कौन विशिष्ट व्यक्तित्व पधारे, कहाँ प्रवचन हुए आदि आदि सारा वर्णन विस्तार से इस पत्रिका में प्रकाशित है। उसके बाद आपका विहार किधर रहा?

आर्वी नगर में उपधान की पूर्णाहुति के पश्चात् हमारा विहार भद्रावती, चन्द्रपुर होते हुए हैदराबाद की ओर हुआ। हैदराबाद में प्रतिष्ठादि कई आयोजनों में निश्रा प्रदान करने की भावभीनी विनंती हैदराबाद संघ के आगेवान लूणिया एवं श्रीमाल परिवार कर रहा था।

बीच में चन्द्रपुर/चांदा कुछ दिन रूकना हुआ। चन्द्रपुर श्री संघ आर्वी चातुर्मास से ही आगामी चातुर्मास हेतु विनंती कर रहा था।

हैदराबाद पहुँचे, तब चैत्र महिने का प्रारंभ हो गया था। परमात्मा महावीर के जन्म कल्याणक का आयोजन करना था। इस हेतु आगेवान श्रावकों की सभाऐं हुई। प्रवचन हुए। हमारी प्रेरणा रही कि श्वेताम्बर दिगम्बर सारा जैन समाज एक होकर परमात्मा महावीर का जन्म कल्याणक मनाये। मेहनत रंग लायी और यह निश्चय किया गया कि सारा सारा जैन समाज मिल कर यह महोत्सव मनायेगा।

पोस्टरों/होर्डिंगों के द्वारा प्रचार किया गया। एक विशाल समारोह का आयोजन हुआ। समारोह की अध्यक्षता के लिये समाज ने आंध्र प्रदेश के वित्तमंत्री श्री विनायकराव विद्यालंकार कोअ ामंत्रित कयाथ ा।स मारोहक ा आयोजन राजा प्रतापगिरि की कोठी में हुआ। समूचा जैन समाज बिना किसी सांप्रदायिक भेदभाव के शामिल हुआ। हैदराबाद का यह आयोजन समाज के लिये प्रकाशस्तंभ के समान था।

हैदराबाद के इस ऐक्य वातावरण की वार्ता ने हमारा हृदय प्रमुदित किया था।

पूज्यश्री की पावन निश्रा में वैशाख सुदि 10 रविवार ता. 1.5.55 को कोठी मंदिर में आदिनाथ परमात्मा की प्रतिमा एवं दादा गुरुदेव के चरणों की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु अष्टाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया था।

क्रमशः

गोत्र का इतिहास
16

कूकड चौपडा, गणधर चौपडा, चींपड, गांधी, बडेर, सांड आदि गोत्रों का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

कूकड चौपडा

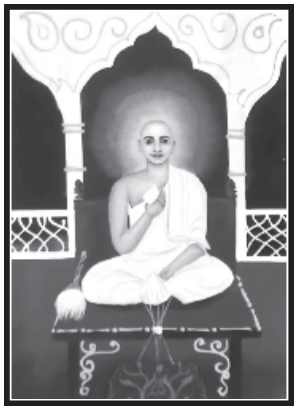

खरतरगच्छ के अधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनवल्लभसूरि का शासन विद्यमान था। वे नवांगी टीकाकार आचार्य भगवंत श्री अभयदेवसूरीश्वरजी म.सा. के पट्ट पर बिराजमान थे। वे विहार करते हुए वि. सं. 1156 में मंडोर नामक नगर में पधारे। वहाँ का राजा नाहड राव परिहार था।

उसके कोई पुत्र नहीं था। वह अपनी पीड़ा लेकर आचार्य जिनवल्लभसूरि के श्रीचरणों में पहुँचा। अपनी प्रार्थना विनम्र स्वरों में प्रस्तुत की।

आचार्य भगवंत ने कहा- तुम्हारे पुण्य में तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होने की स्थिति है। पर तुम्हें संकल्प लेना होगा कि मैं एक संतान वीतराग परमात्मा के शासन को समर्पित करूँगा।

राजा के संकल्प लेने पर आचार्य भगवंत ने वासचूर्ण डाला। परिणाम स्वरूप उसके चार पुत्र हुए। राजा को अपना वचन याद था। पर रानी नहीं मानी। उसने राजा से कहा- यदि तुमने अपना एक पुत्र जिनशासन को सौंप दिया, तो मैं हमेशा के लिये इस देह का त्याग कर दूंगी। स्त्रीहठ के आगे राजा को झुकना पड़ा।

सबसे बडे पुत्र का नाम कुक्कडदेव था। एक दिन उसके भोजन में सांप की गरल गिर गई। उसे पता न चला और उसने वह भोजन कर लिया। सर्प का विष पूरे शरीर में व्याप्त हो गया।

राजा नाहरदेव ने बहुत इलाज करवाये। औषधि प्रयोग किया। कई ओझाओं से झाड़-फूंक भी करवाई गई। पर राजकुमार स्वस्थ नहीं हो पाया।

तब राजा के मंत्री कायस्थ गुणधर ने कहा- राजन्! आप अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण कीजिये। आपने आचार्य श्री जिनवल्लभसूरि को वचन दिया था। वे तो अब स्वर्गवासी हो गये। उनके पट्टधर शिष्य आचार्य जिनदत्तसूरि भी बडे चमत्कारी साधना संपन्न महापुरुष है। उनका विचरण भी इन दिनों मंडोर के आसपास ही है। आप वहाँ पधार कर अपनी गलती के लिये क्षमा मांगे। गुरुदेव बहुत उदार है। आपकी समस्या का समाधान भी वहीं से प्राप्त होगा।

राजा अपने पुत्र को लेकर गुरुदेव आचार्य जिनदत्तसूरि के पास पहुँचा। गुरुदेव ने दृष्टिपात किया। सारा रहस्य समझ में आ गया।

उन्होंने कहा- जाओ! कुकड़ गाय का नवनीत लेकर आओ। उस नवनीत में मिलाने के लिये मैं विशिष्ट विषापहार मंत्र से अभिमंत्रित वासचूर्ण देता हूँ, उसे मिश्रित करो और कुमार के पूरे शरीर में चोपड दो।

नवनीत के चोपडने/विलेपन से राजकुमार धीरे-धीरे होश में आया। कुछ ही समय पश्चात् वह सर्वथा निर्विष हो गया। गुरुदेव के इस प्रत्यक्ष चमत्कार व उनके उपकारों से प्रभावित होकर राजा नाहरदेव गुरुदेव का परम भक्त बन गया। गुरुदेव ने सम्यक्त्व का स्वरूप समझाकर जिनधर्म का परिचय दिया। राजा ने सपरिवार सम्यक्त्व/जैनत्व धारण किया। राजा के पुत्र का नाम कुकडदेव था तथा उसके शरीर पर नवनीत चुपडा गया था, इस कारण उनका गोत्र 'कूकड चोपडा' कहलाया।

गुणधर या गणधर चोपडा

कायस्थ मंत्री गुणधर माथुर ने दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरि की साधना, चमत्कार और उनके तप त्याग से प्रभावित हो नित्य उनके उपदेश श्रवण करने लगा। उसने भी वीतराग परमात्मा के धर्म को स्वीकार कर लिया। उसने ही राजकुमार के शरीर पर नवनीत चुपडा था। इसलिये उसके वंशज गुणधर चोपडा कहलाये।

इस प्रकार वि.सं. 1169 में दादा गुरुदेव श्री

जिनदत्तसूरि ने कूकड, चोपडा व गणधर चोपडा आदि विभिन्न गोत्रों की स्थापना कर इन्हें ओसवालों में सम्मिलित किया। कालान्तर में इस गोत्र की कई शाखाऐं बनी।

गांधी

गुणधर चोपडा के वंशज जब गांधी का व्यवसाय करने लगे तो उसकी एक शाखा गांधी कहलाई।

मोदी

एक बार जब जोधपुर के महाराजा अजितसिंहजी विपत्ति में थे, तब उन्हें पहाड़ों में भटकना पड़ा था। उस समय गणधर चोपडा के वंशजों ने उनकी भोजन आदि की पूरी व्यवस्था कर महाराजा को सहायता पहुँचाई थी। परिणाम स्वरूप बाद में महाराजा ने उन्हें वंश परम्परागत मोदी की उपाधि देकर सम्मानित किया था। तब से इनके वंशज मोदी कहलाने लगे।

चींपड

राजा के एक पुत्र का नाम चींपड था। अत: उसके वंशज चींपड कहलाये।

सांड

राजा के एक पुत्र का नाम सांडे था। उसके वंशज सांड कहलाये।

राजा नाहरदेव की पांचवीं पीढ़ी में दीपसी हए। उस समय में दादा श्री जिनकुशलसूरि के उपदेश से ओसवालों के साथ सामाजिक व्यवहार प्रारंभ हुआ।

कोठारी

नानूदे की पांचवीं पीढी में दीपसी/दीपचंदजी हुए। उनकी 11वीं पीढी में सोनपालजी हुए जिन्होंने शत्रुंजय का संघ निकाला एवं धर्म कार्यों में लाखों रुपये अर्पण किये। उनके पौत्र ठाकरसी हुए। राव चूंडाजी राठौर के यहाँ कोठार का कार्य करने से इनके वंशज कोठारी कहलाये।

हाकिम

ठाकुरसी के वंशज बाद में बीकानेर चले गये। वहाँ के राव बीकाजी ने इन्हें हाकिम पद दिया। हाकिम का काम करने से इनके वंशज हाकिम कहलाये।

यति श्रीपालचंद्रजी द्वारा लिखित जैन सम्प्रदाय शिक्षा के अनुसार वि.सं. 1152 में आचार्य जिनवल्लभसूरि मण्डोर पधारे। उस समय मंडोर के राजा पडिहार नानूदे का पुत्र धवलचंद कुष्ट रोग से दुखी था। राजा ने इस रोग की चर्चा गुरुदेव से की। गुरुदेव ने कुकडी गाय का घी मंगवाकर उसे अभिमंत्रित किया। कुष्ट रोगी के पूरे शरीर में वह मंत्रित घी चुपडवाने से राजकुमार धवलचंद स्वस्थ हो गया। राजा ने प्रभावित होकर गुरुदेव से जैन धर्म को स्वीकार किया। गुरुदेव ने ओसवाल जाति में सम्मिलित कर कूकड चोपडा गोत्र दिया। मंत्री गुणधर से गणधर चोपडा गोत्र चला।

इस प्रकार चोपडा गोत्र की कुल 12 शाखाऐं हुई। इनमें परस्पर भाईपा है।

1. कूकड, 2. चोपडा, 3. गणधर चोपडा, 4.चींपड, 5. सांड, 6. मोदी, 7. बूबकिया, 8. धूपिया, 9. बडेर, 10. जोगिया, 11. गांधी, 12. कोठारी ।

चोपडा परिवार ने अनेक जिनमंदिरों का निर्माण करवाया। जैसलमेर स्थित श्री संभवनाथ प्रभु का मंदिर जिसका निर्माण वि. सं. 1494 में प्रारंभ करवाया और उसकी प्रतिष्ठा आचार्य प्रवर श्री जिनभद्रसूरि द्वारा वि.सं. 1494 मिगसर वदि 3 को संपन्न हुई, का निर्माण चोपडा वंश के चारों भ्राता शाह शिवराज, महिराज, लोला और लाखन परिवार ने कराया। इसी मंदिर के भूगर्भ में खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिनभद्रसूरि ज्ञान भंडार है, जो जिनशासन में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

जैसलमेर के ही अष्टापद मंदिर के निर्माण में संखलेचा परिवार के खेताजी तथा चोपडा परिवार के शाह पांचा का योगदान रहा। इस मंदिर की प्रतिष्ठा वि.सं. 1536 फाल्गुन सुदि 3 को आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरि के शिष्य आचार्य श्री जिनसमुद्रसूरि द्वारा संपन्न हुई थी।

लोहावट में चन्द्रप्रभु मंदिर का निर्माण भी चोपडा परिवार द्वारा करवाया हुआ है।

धर्म-विज्ञान

उपवास : आध्यात्मिक और वैज्ञानिक

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

उपवास आध्यात्मिक साधकीय जीवन का अभिन्न अंग है। अन्य धर्मग्रन्थों में उपवास का जितना महत्व है, उससे असंख्य गुणा अधिक महत्त्व जैन शास्त्रों में है।

आदिनाथ ने चार सौ दिनों का तप करके कर्म निर्जरा का लक्ष्य सिद्ध किया। परमात्मा महावीर की तो पूर्ण जीवन शैली तपोमयी ही थी।

प्रस्तुत आलेख में हमें उन अमृत-बिन्दुओं को समझना है, जो हमें उपवास के आध्यात्मिक और वैज्ञानिक, दोनों पक्षों से अवगत करवाये।

वस् धातु से पूर्व उप उपसर्ग लगा है और व्याकरण-प्रक्रिया के द्वारा 'उपवास' शब्द निष्पन्न हुआ है। उप का अर्थ है- निकट, पास, करीब। वास का अर्थ है- रहना।

जिस प्रक्रिया के द्वारा आत्मा के निकट निवास-आवास किया जाता है, वह उपवास है।

शास्त्रकारों ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है-

उपावृत्तस्य दोषेभ्यः, सम्यग्वासो गुणैः सह।
उपवास स विज्ञेयो, न शरीर विशोषणम्॥

दोषों से आवृत्त आत्मा का गुणों के साथ निवास करना उपवास है। वस्तुतः यह शरीर का नहीं, दोषों का शोषण है।

आहार-त्याग कितना?

जैन उपवास पद्धति प्रायः सर्वत्र सुविदित है। यद्यपि मूल पद्धति वर्तमान में लुप्त हो गयी है। उसे समझने के लिये जैन शास्त्रों मे वर्णित 'चतुर्थ भक्त' के अर्थ को समझना होगा।

चतुर्थ अर्थात् चार तथा भक्त अर्थात् भोजन। जिसमें चार आहार का त्याग हो, वह उपवास है। अब यहाँ यह जिज्ञासा अवतार लेती है कि चार आहार के त्याग का अर्थ क्या है?

मूलतः एक दिन में दो बार का आहार कहा गया है। एक सुबह 10 बजे और दूसरा शाम 4 बजे। जब से आहार ग्रहण का मूल विधान लुप्त हुआ है, तब आहार उपहार न बनकर जहर और विकार बन गया है। आयुर्वेद भी इसी तथ्य को स्वीकार करता है। जैन विधान के अनुसार उपवास के दिन दो आहार का त्याग और उपवास के आगे-पीछे एकासन करने से एक-एक आहार का त्याग, इस प्रकार चार बार भोजन का त्याग हो जाता है।

वर्तमान में सर्व स्वीकार्य जैन पद्धति के अनुसार उपवास की पूर्व रात्रि में भोजन का त्याग एवं अगली भोर के सूर्योदय तक उपवास परिपूर्ण हो जाता है और बाद में न्यूनतम तप नवकारसी करने की प्रथा प्रचलित है।

वैदिक परम्परा में उपवास का जो स्वरूप है, वह उनकी विधि से विपरीत है। कहा गया है कि **'तपनोदयमारभ्य यामाष्टकम् न भोजनम्'** सूर्योदय से लगाकर आठ प्रहर तक अर्थात् अगले सूर्योदय तक भोजन न करना उपवास है। यह पवित्र विधि हिन्दुओं की वर्तमानकालिन उपवास-साधना में क्यों नहीं है, यह एक संशोधन का विषय है।

कषाय त्याग का उद्देश्य-

उपवास किसलिये करना है?तो शास्त्रकार कहते हैं कि आत्मा की निकटता पाने के लिये। आत्मा की निकटता आत्मा की गहरी, उजली, पवित्र और दिव्यानंद भरी अन्तस् गुहा में प्रवेश करने से प्राप्त होती है।

तप न मद करने के लिये है, न मान पाने के लिये।

तप मद के कारण ही कुरगडु मुनि ने ऐसा भयंकर तपान्तराय कर्म बांधा कि संवत्सरी के दिन भी वे उपवास नहीं कर पाते थे। तप न द्रौपदी की तरह भोग की याचना के लिये है, न विश्वभूति की तरह प्रतिशोध के लिये। तप न तो लब्धियाँ प्राप्त करके आकाश में उड़ान भरने के लिये है, न जल-स्पर्श के बिना नदी-सागर पार करने के लिये।

उपवास तो जीवन-साधना का शिलान्यास है। 'तपसा निर्जरा च' तप कर्म निर्जरा का माध्यम है और कर्म कवच को भेदने वाला तीक्ष्ण तीर है।

एक कथाः-

एक मुनि गुरु चरणों में नित पहुँचता और हितशिक्षा देने का निवेदन करता। गुरु एक ही वाक्य बोलते-कृश करो। चार माह में चौथी बार जब पहुँचा, तब भी 'कृश करो' की शिक्षा सुनकर मुनि आवेश में आया और अपनी अंगुली को तिनके की भाँति तोड़ता हुआ बोला-आप कहते हैं कि कृश कर...कृश कर पर अब और कितना कृश करूं?

गुरु ने कहा-मैंने शरीर को नहीं, क्रोध को कृश-निर्बल करने की शिक्षा दी थी। तुमने मात्र शरीर रूपी बर्तन को तो तपाया पर आत्मा के कुसंस्कारों को तपाकर ज्ञान-ध्यान व समता-मधुरता का घी नहीं पाया।

वस्तुतः उपवास रूपी गर्मी आत्मा में पड़े पाप के कीचड़ को सौंखने के लिये है। उपवास दोष-अंधकार को दूर करके ज्ञान-प्रकाश पाने के लिये है।

उपदेश प्रसाद में लिखा गया है-

कषाय विषयाहार, त्यागो यत्र विधीयते।
उपवास स विज्ञेय, शेष लंघनकं विदुः॥२८५॥

आहार के साथ क्रोध-मान-माया-लोभ, इन चारों कषायों का एवं पांच इन्द्रियों के तेईस विषयों में राग-द्वेष का त्याग जहाँ होता है, वह उपवास है, अन्यथा मात्र देह शोषण जानना चाहिये।

वैज्ञानिक दृष्टिकोणः-

आध्यात्मिक दृष्टिकोण के साथ वैज्ञानिक दृष्टि से भी उपवास का अनिर्वचनीय महत्त्व है। सम्पूर्ण शरीर तन्त्र एवं मानस तंत्र पर इसका सकारात्मक प्रभाव देखा गया है।

अमेरिका की नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ऐजिंग की न्यूरोसायन्स लेबोरेटरी के प्रोफेसर मार्क मेटसन का कहना है कि उपवास से हृदय, मांसपेशियाँ और आंते सुचारू रूप से कार्य करती हैं। उनका यह भी कहना है कि उपवास में ऊर्जा की खपत घट जाती है। पाचन क्रिया को विराम मिलता है, चर्बी घटती है और रोग-प्रतिरोधक शक्ति भी बढ़ती है।

शारीरिक प्रभावों के साथ-साथ मानसिक प्रभाव भी सकारात्मक रूप से देखे गये हैं। उपवास व्रतधारी का मानसिक विकास अन्य व्यक्तियों की अपेक्षाकृत तीव्र गति से होता है। इस प्रक्रिया से जीवन तन्त्र सशक्त होने से उपवास अवसाद, घुटन, चिन्ता आदि मानसिक तनावों को भी दूर करता है। मानसिक एकाग्रता और पवित्रता का भी विस्तार इस जिनोक्त प्रक्रिया के द्वारा होता है।

एक दिव्य औषधिः-

देवताओं के महान् चिकित्सक अश्विनी एक बार रोगी बन कर राजा भोज की सभा के महान् आयुर्वेदज्ञ वाग्भट्ट के पास आये और प्रश्न किया-वह कौनसी औषधि है, जो न तो पृथ्वी पर उत्पन्न होती है, न आकाश और पानी में। जो बाजार में भी नहीं बिकती, फिर भी शास्त्रों में जिसका वर्णन है।

वाग्भट्ट ने समाधान देते हुए कहा-

अभूमिजमनाकाशं, पथ्यं रसविवर्जितम्।
पूर्वाचार्यौसमाख्यातं लंघनं परमौषधम्॥

जो पृथ्वीतल पर एव आकाश में पैदा नहीं होती, जो जल से भी रहित है, यदि ऐसा कोई पथ्य है तो वह उपवास है। इस परमौषधि-दिव्यौषधि की पूर्वाचार्यों ने भी प्रशंसा की है।

उपसंहारः-

अहिंसक, निर्व्ययी और अनायास प्राप्त उपवास की औषधि का गुणवर्णन करने में बृहस्पति भी समर्थ नहीं हैं। मानसिक वातावरण को ही नहीं, भौतिक वातावरण को भी स्वच्छ-पवित्र रखने वाला यह दिव्य उपक्रम हर तरह से उपयोगी है। तन को निरोगी, जीवन को उपयोगी एवं मन को योगी बनाने के लिये उपवास जीवन में जीने योग्य साधना है।

आईये! हम सभी इस सुसाधना से परम तत्त्व का अनुभव करें। उपवास की आराधना से कषायों को कृश करे, विषयों का विष हरे, परम तत्त्व को शीघ्र वरे एवं आत्म कोष में आनंद अमृत भरे। यदि इस परम तथ्य व कथ्य पर विश्वास न हो तो एक बार अपनाकर जरुर देखें।

खरतरगच्छ सहस्राब्दी गौरव वर्ष आलेख

खरतरगच्छ का राजाओं से सम्बन्ध

—महोपाध्याय विनयसागरजी

शास्त्रों में विशिष्ट व्यक्तित्व एवं गुणधारक आचार्यों को प्रभावक शब्द से संबोधित किया गया है। प्रभावक आचार्य आठ प्रकार के बतलाए गये हैं:- प्रावचनिक, धर्मकथा प्ररूपक, वादी, नैमित्तिक, तपस्वी, विद्याधारक, सिद्धिधारक और कवि। शासन प्रभावक आचार्य उपरोक्त किसी भी गुणसिद्धि को प्रमुखता देते हुए शासन की रक्षा के लिए, शासन के उत्कर्ष के लिए, शासन की प्रभावना के लिए प्रयोग करते हैं। किसी भी देश के राजा को अपने धर्म का अनुयायी बनाकर शासन प्रभावना इनका मुख्य लक्ष्य रहता है। किसी को पूर्णत: अपना अनुयायी बना लेना, किसी के साथ गाढ़ मधुर सम्बन्ध रखते हुए उनको प्रभावित कर तीर्थों और संघों के उपद्रवों को दूर करना, फरमान प्राप्त करना और किसी के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अपने समाज को सुरक्षित रखना। 'यथा राजा तथा प्रजा' के न्याय के अनुसार प्रजा राजा का ही अनुकरण करती है और राजा द्वारा स्वीकृत या सम्मानित धर्म ही प्रजा का धर्म हो जाता है। अत: यह आवश्यक होता है कि अपने व्यक्तित्व, कृतित्व और चमत्कारिकता से किसी भी नरेश को प्रतिबोध देकर धार्मिक कार्य कराये जाएं। पूर्व- परम्परा का अनुसरण करते हुए खरतरगच्छाचार्यों ने भी इस ओर पहल की और न केवल गच्छ के अभ्युदय को अपितु शासन के अभ्युदय को भी प्रखरता से बढ़ाया। इतिहास में इस सम्बन्ध में जो भी उल्लेख मिलते हैं उनमें से कतिपय उल्लेख निम्न हैं:-

卐 पाटण के दुर्लभराज चौलुक्य-

श्री वर्द्धमान सूरि के शिष्य श्री जिनेश्वरसूरि ने अणहिल्ल पत्तन में गुर्जरेश्वर दुर्लभराज की सभा में चैत्यवासियों के साथ शास्त्रार्थ कर, उनको पराजित कर 'खरतर' विरुद प्राप्त किया। महाराजा दुर्लभराज इनको बड़ी सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

卐 धारा एवं चित्तोड़ नरेश नरवर्म-

श्री जिनवल्लभसूरि (स्वर्ग सं० ११६७) जब चित्तोड़ में थे तब, धाराधीश नरवर्म की सभा में दो दक्षिणी पण्डितों ने 'कण्ठे कुठार: कमठे ठकार:' यह समस्यापद रखा। स्थानीय विद्वानों व राज पण्डितों की समस्यापूर्ति से असन्तुष्ट होकर, कवि जिनवल्लभ का नाम सुनकर द्रुतगति से अपने विशिष्ट अनुचरों को भेजकर उनने यह समस्या पूर्ति करवाई। महाराजा नरवर्म सन्तुष्ट हुए। अष्टसप्तति के अनुसार महाराजा नरवर्म चित्तोड़ के भी अधिपति थे। जिनवल्लभसूरि द्वारा नवनिर्मापित विधि-चैत्यों में आकर भक्ति पूर्वक वन्दना की ओर भेंट भी की। नरवर्म जिनवल्लभसूरि के प्रमुख भक्त थे।

卐 अजमेर के अर्णोराज चौहान-

ये युगप्रधान जिनदत्तसूरि के परम भक्त थे और उनके उपदेशों से प्रभावित होकर जिनमंदिर व उपाश्रयों के लिए यथेच्छ भूमि प्रदान की थी।

卐 त्रिभुवनगिरि का राजा कुमारपाल-

युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरिजी ने त्रिभुवनगिरि (तिहुणगढ़-तिमनगढ़) पधारकर वहां के महाराजा कुमारपाल को प्रतिबोध दिया। श्री शान्तिनाथ मंदिर की प्रतिष्ठा की और उधर के प्रदेश में प्रचुरता के साथ अपने शिष्यों को विहार कराया।

तेरहवीं शताब्दी में चित्रित काष्ठपट्टिका में जिनदत्तसूरि के साथ महाराजा कुमारपाल को भी दिखाया गया है।

卐 दिल्ली के महाराजा मदनपाल-

सं० १२२३ में श्री जिनदत्तसूरिजी के शिष्य मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी दिल्ली के निकटवर्ती ग्राम में पधारे। जिनदत्तसूरि द्वारा निषेधाज्ञा होने पर भी महाराजा के विशेष अनुरोध से जिनचन्द्रसूरि दिल्ली पधारे। बड़े भारी समारोह से उनका प्रवेशोत्सव हुआ। महाराजा मदनपाल (अनङ्गपाल) स्वयं सूरिजी का हाथ पकड़े हुए उनकी पेशवाई में चल रहा

था। राजा की प्रार्थना से उन्होंने वहीं चातुर्मास किया पर दुर्भाग्यवश उनका वहीं स्वर्गवास हो गया।

卐 आशिका नरेश भीमसिंह-

श्री जिनपतिसूरिजी सं० १२२८ में आशिका नरेश के विशेष अनुरोध को ध्यान में रखकर आशिका पधारे। भूपति भीमसिंह के हाथ पूर्वोक्त दिल्ली के प्रवेश की भांति आशिका में प्रवेशोत्सव हुआ। सूरिजी ने स्थानीय दिगम्बराचार्य के साथ शास्त्रार्थ किया और उसमें सूरिजी की विजय हुई। इससे आशिका नरेश बहुत प्रसन्न होकर सूरिजी के प्रति श्रद्धालु बना। पुनः सं० १२३२ में मंदिर की प्रतिष्ठा करने हेतु सूरिजी आशिका पधारे।

सहस्राब्दी समारोह प्रारंभ सन् 2021 मालपुरा तीर्थ

卐 अजमेर का महाराजा पृथ्वीराज चौहान-

श्री जिनपतिसूरिजी सं० १२३९ में अजमेर पधारे। राजसभा में चैत्यवासी उपकेशगच्छीय पं० पद्मप्रभ के साथ उनका शास्त्रार्थ हुआ, जिसमें सूरिजी की विजय हुई और पृथ्वीराज चौहान ने स्वयं उपाश्रय आकर जयपत्र आचार्य को भेंट किया।

卐 अणहिल्लपुर (पाटण) का राजा भीमदेव-

सं० १२४४ में अणहिल्लपुर का कोट्याधिपति श्रावक अभयकुमार तीर्थयात्रा के हेतु संघ निकालने की इच्छा से महाराजाधिराज भीमदेव और प्रधानमंत्री जगदेव पड़िहार के पास गया और उनसे अर्ज कर स्वयं राजा के हाथ से लिखवा कर अजमेर भेजा। सूरिजी ने निमंत्रण पाकर अजमेरी संघ के साथ विहार कर दिया। तीर्थयात्रा के अनन्तर वापस लौटते हुए सूरिजी आशापल्ली पधारे।

卐 लवणखेडा का राणा केल्हण-

सं० १२५१ में राणा केल्हण के आग्रह से आचार्य जिनपतिसूरि लवणखेटक पधारे। वहाँ 'दक्षिणावर्त्त आरात्रिकावतारणोत्सव' बड़ी धूमधाम से मनाया।

卐 नगरकोट का राजा पृथ्वीचन्द्र-

सं० १२७३ में (बृहद्वार) में गंगादशहरे पर गंगा-स्नान के लिये बहुत से राणाओं के साथ महाराजाधिराज श्रीपृथ्वीचंद्र नगरकोट से आया। उसके साथ पं० मनोदानन्द नामक एक काश्मीरी पण्डित भी था। उसने श्री जिनपतिसूरि के उपाश्रय पर शास्त्रार्थ की चुनौती का नोटिश लगा दिया। तब सूरिजी के शिष्य जिनपालोपाध्याय आदि शास्त्रार्थ के लिये महाराजा पृथ्वीचन्द्र की सभा में आये और वाद-विवाद में उक्त पण्डित को परास्त कर दिया। महाराजा ने पण्डित की चुनौती को फाड़कर उपाध्यायजी को जयपत्र दिया।

卐 पालनपुर का राजकुमार जगसिंह-

सं० १२८८ पालनपुर के सेठ भुवनपाल ने, राजकुमार जगसिंह की उपस्थिति में ध्वजारोपण का उत्सव बड़े समारोह से मनाया।

卐 जावालिपुर का राजा उदयसिंह-

सं० १३१० वैशाख-सुदि १३ शनिवार स्वाति नक्षत्र के दिन, श्री महावीर विधिचैत्य में, राजा व प्रधान पुरुषों की उपस्थिति में राजमान्य महामन्त्री जैत्रसिंह के तत्त्वावधान में, पालनपुर, वागड़देश आदि के श्रावकों के एकत्र होने पर श्री चौवीस जिनालय आदि की प्रतिष्ठा, दीक्षादि महामहोत्सव पूर्वक हुई।

सं० १३१४ में माघ सुदि १३ को राजा उदयसिंह के प्रमोदपूर्ण सान्निध्य से कनकगिरि के मुख्य मंदिर पर ध्वजारोपण हुआ।

卐 स्वर्णगिरि का चाचिगदेव-

सं० १३१६ में माघ सुदि ६ को, राजा चाचिगदेव के राज्यत्वकाल में स्वर्णगिरि के शान्तिनाथ मंदिर पर स्वर्णमय ध्वजदंड व कलश स्थापित किये गये।

卐 भीमपल्ली का राजा माण्डलिक-

सं० १३१७ वैशाख सुदि १० सोमवार को, भीमपल्ली में राजा माण्डलिक के राज्यत्वकाल में दण्डनायक श्रीमीलगण (?) के सान्निध्य में महावीर जिनालय पर स्वर्णदण्ड-कलशादि चढाये गये।

卐 चित्तोड़ का महाराजा समरसिंह-

सं० १३३५ फाल्गुन वदि ५ को, महाराजा समरसिंह

के रामराज्य में चित्तोड़ के चौरासी मुहल्ले में जलयात्रा पूर्वक स्थानीय ११ मंदिरों के ११ छत्र व मुनिसुव्रत, आदिनाथ, अजितनाथ, वासुपूज्य प्रभु की प्रतिमाएं स्थापित की गईं।

卐 चित्तोड़ के युवराज अरिसिंह-

सं० १३३५ फाल्गुन शुक्ल ५ को, सकल राज्यधुरा को धारण करने वाले राजकुमार अरिसिंह के सान्निध्य से आदिनाथ मंदिर पर ध्वजारोप हुआ।

सहस्राब्दी समारोह प्रारंभ सन् 2021 मालपुरा तीर्थ

卐 बीजापुर नरेश सारङ्गदेव -

सं० १३३७ ज्येष्ठ कृष्णा ४ शुक्रवार को महाराजाधिराज सारङ्गदेव के रामराज्य में, महामात्य मल्लदेव व उपमंत्री विन्ध्यादित्य के कार्यकाल में, बीजापुर में श्री जिनप्रबोधसूरिजी का नगर प्रवेश बड़े समारोह से हुआ। विन्ध्यादित्य सूरिजी की स्तुति करता था।

卐 शम्यानयन (सिवाना) का राजा श्रीसोम-

सं० १३४० में श्री जिनप्रबोधसूरिजी ने सन्मुख आये हुए श्रीसोम महाराजा की वीनति स्वीकार कर शम्यानयन में चातुर्मास किया।

卐 जेसलमेर नरेश कर्णदेव-

सं० १३४० में फाल्गुन में श्री जिनप्रबोधसूरिजी जेसलमेर पधारे। नगर प्रवेश बड़े समारोह से हुआ। राजा कर्ण ससैन्य दर्शनार्थ सामने आया। महाराजा के आग्रह से चातुर्मास भी उन्होंने वहीं किया।

卐 जावालिपुर का राजा सामन्तसिंह -

सं० १३४२ ज्येष्ठ कृष्णा ९ को, जालोर में महाराजा सामन्तसिंह के सान्निध्य में अनेक जिन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा और इन्द्रमहोत्सव सम्पन्न हुआ।

卐 शम्यानयन का महाराजा सोमेश्वर चौहान-

सं० १३४६ फाल्गुन शुक्ला ८ को, महाराजा सोमेश्वरकारित विस्तृत प्रवेशोत्सव से श्री जिनचन्द्रसूरिजी शम्यानयन पधारे। सा० बाहड, भां० भीमा, जगसिंह, खेतसिंह सुश्रावकों के बनवाए हुए प्रासाद में उन्होंने शान्तिनाथ प्रभु की स्थापना की।

卐 जेसलमेर नरेश जैत्रसिंह-

सं० १३५६ में राजाधिराज जैत्रसिंह की प्रार्थना को मान दे कर श्री जिनचन्द्रसूरिजी मार्गशीर्ष शुक्ला ४ को जेसलमेर पधारे। पूज्यश्री के स्वागतार्थ महाराजा ८ कोष सम्मुख गये। सं० १३५७ मार्गशीर्ष कृष्णा ९ को, महाराजा जैत्रसिंह के भेजे हुए वाजित्रों की ध्वनि के साथ मालारोपण व दीक्षा महोत्सव सम्पन्न हुआ।

卐 शम्यानयन नरेश शीतलदेव-

सं० १३६० में महाराजा शीतलदेव की वीनति और मन्त्री नाणचन्द्र आदि की अभ्यर्थना से श्री जिनचन्द्रसूरिजी शम्यानयन पधारे और शान्तिनाथ भगवान के दर्शन किये।

卐 सुलतान कुतुबुद्दीन-

सं० १३७४ में मन्त्रीदलीय ठक्कुर अचलसिंह ने बादशाह कुतुबुद्दीन से सर्वत्र निर्विघ्नतया यात्रा करने के लिये फरमान प्राप्त कर नागौर से संघ निकाला। मारवाड़ और वागड़ देश के नाना नगरों को पार कर, संघ दिल्ली पहुँचा। श्री जिनचन्द्रसूरिजी ने दिल्ली की खण्डा-सराय में चातुर्मास किया। पश्चात् सुलतान व संघ के कथन से प्राचीन तीर्थस्थान मथुरा यात्रा करने पधारे।

卐 मेड़ता का राणा मालदेव चौहान-

सं० १३७६ में राणा मालदेव की प्रार्थना से श्री जिनचन्द्रसूरिजी मेड़ता पधारे और वहाँ राणा व संघ की प्रार्थना से २४ दिन ठहरे।

卐 दिल्लीपति गयासुद्दीन बादशाह-

सं० १३८० में दिल्ली निवासी सेठ रयपति के पुत्र सा० धर्मसिंह ने प्रधानमन्त्री नेब साहब की सहायता से सम्राट गयासउद्दीन द्वारा तीर्थयात्रा का फरमान निकलवाया, और श्री जिनकुशलसूरिजी के नेतृत्व में शत्रुंजयादि तीर्थों का संघ निकाला।

सं० १३८१ में भीमपल्ली के सेठ वीरदेव ने भी सम्राट से तीर्थयात्रा का फरमान प्राप्त कर श्री जिनकुशलसूरिजी के उपदेश से शत्रुंजयादि तीर्थों के लिये संघ निकाला।

卐 सौराष्ट्रनरेश महीपालदेव-

सं० १३८० में शत्रुंजय यात्रा के प्रसंग में सेठ मोखदेव को, सौराष्ट्रमहीमण्डनभूपाल महीपाल देव को दूसरी देह सदृश अर्थात् अत्यन्त प्रभावशाली लिखा है।

(क्रमशः)

'खरतरगच्छ साहित्य कोश' पुस्तक के प्राक्कथन से आंशिक संशोधन सह साभार

प्रेरक
कथा

प्रेरक कथा

कैलाश बी. संकलेचा

एक साधु नदी के किनारे बैठा था।

किसी ने पूछा : महाराज क्या कर रहे हो?

साधु ने कहा : प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि पूरी नदी बह जाएं तो फिर पार करूँ।

उस व्यक्ति ने कहा : कैसी बात करते हो महाराज पूरा जल बहने के इंतजार में तो आप कभी नदी पार ही नहीं कर पाओगे।

साधु ने कहा : यही तो मैं आप लोगों को बताना चाहता हूँ कि आप लोग जो सदा यह कहते रहते हो कि एक बार जीवन की जिम्मेदारियाँ पूरी हो जाएं तो

उपाश्रय जाऊँ,
सामायिक करूँ,
स्वाध्याय करूँ,
संतसमागम करूँ,
आत्म कल्याण करूँ,
सूत्र वांचन करूँ,
समाज सेवा करूँ।

जैसे नदी का जल खत्म नहीं होगा, हमको ही इस जल ही पार जाने का रास्ता बनाना है।

वैसे ही चातुर्मास शुरू हो गया है। हम भी समय का सदुपयोग धर्म आराधना में करें। नहीं तो जीवन खत्म हो जायेगा पर जीवन के काम खत्म नही होंगे।

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा संचालित

नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय एवं मणिधारी दादाबाड़ी के दर्शनार्थ पधारिए

द्वितीय दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचंद्रसूरिजी की जन्मस्थली विक्रमपुर (बीकमपुर) में नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय तथा मणिधारी दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा खरतरगच्छाधिपति प.पू. आचार्य श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के वरद हस्त से दिनांक 15 नवम्बर 2017 को हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुई है। ऐसे भव्य जिनालय एवं दादाबाड़ी के दर्शनार्थ सपरिवार पधारकर यात्रा का लाभ लेवें।

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा संचालित दादाबाड़ी में साधु-साध्वीयों के लिये आराधना हॉल बनाया गया है एवं आधुनिक धर्मशाला में 4 कमरें वातानुकूलित बनाये गये हैं तथा डोरमेट्रीमय 20 पलंग की सुविधा उपलब्ध है। सर्व सुविधायुक्त भोजनशाला चालू है।

यहां पधारने के लिये बीकानेर तथा फलोदी से बस सर्विस चालू है। यह स्थान फलोदी से 75 किमी. तथा बीकानेर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह जैसलमेर-फलोदी-बीकानेर हाइवे पर बाप से 45 किमी. पर स्थित है।

Executive Trustee
Shri padamji Tatia
Mob. 9840842148

मुनीमजी : प्रशान्त शर्मा
श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी,
बीकमपुर (विक्रमपुर)- 334305, (जि.बीकानेर-राज.)
मो. 9571353635 पेढ़ी, 9001426345 मुनीमजी

धारावाहिक
कथा
9

अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

(गतांक से आगे)

क्या बात है स्वामिन्! आप आज कुछ ज्यादा ही क्लान्त और श्रमित लग रहे है?क्या आज रात्रि सभा में कुछ ज्यादा परिश्रम हो गया?

नहीं देवी! मैं शारीरिक अपेक्षा से क्लान्त नहीं हूँ। मेरी उदासी का कारण कामकाज का बोझ नहीं, बल्कि कुछ और है, कहते हुए महाराजा विमलयश धम्म से पलंग पर पड़ गये।

महारानी महाराज की इस बिखरी हुई स्थिति से कांप उठी। उसने सोचा- आज ऐसी क्या विशेष घटना हुई कि महाराजा इस कदर हताश और निराश है। महाराजा तो इतने बहादुर है कि राज्य की कैसी भी परिस्थिति हो, उसे सुलझाने का पुरुषार्थ अवश्य करते हैं पर उसे हृदय की गहराई में कभी नहीं उतारते। राजसभा की चिन्ताओं को राजसभा में ही छोड़कर महल में पधारते हैं।

सहमते हुए उसने पूछा- क्या आप अपनी चिंता का कारण मुझे बतायेंगे?जरूर कोई न कोई असामान्य घटना घटी है कि जिसने आपको इतना अंदर से हिला दिया है। बताईये स्वामी! मुझे बताओ! संभव है, मैं आपकी कुछ सहायता कर सकूं। अगर सहायता नहीं कर पायी तो कम से कम कहने से आपका दु:ख आधा अवश्य हो आयेगा।

गहरी श्वास छोडते हुए महाराज विमलयश ने कहा- देवी! मैं ज्योंहि अपनी चिन्ता का कारण तुम्हें बताऊँगा, तुम मुझसे भी ज्यादा दु:खी हो जाओगी। मेरी चिंता का कारण प्रजा या राज्यव्यवस्था नहीं है, बल्कि मेरी चिन्ता राजकुमार पुष्पचूल की हरकतें हैं।

रानी ने ज्योंहि पुष्पचूल का नाम सुना, वह सकते में आ गयी। तो क्या उसकी आशंकाएँ सही थी। उसे काफी समय से लग रहा था कि पुष्पचूल के हावभाव सही नहीं हैं। उसके व्यवहार में कहीं न कहीं कृत्रिमता है। कुछ ऐसा है जिसे छिपाने का वह प्रतिपल पुरुषार्थ करता है। उसके चेहरे पर निर्मल मुस्कान की जगह दंभ छलकता है। वह पुष्पचूल के अपराधी होने की कल्पना मात्र से कांप उठी।

उसने डरते हुए पूछा- युवराज ने ऐसा क्या किया कि आप इतने बैचेन हो गये हैं?

महाराजा विमलयश कुछ क्षण तक तो शून्य दीवार को घूरते रहे पर जब महारानी ने दुबारा पूछा- तो वे स्वयं को रोक न सके। उन्होंने आक्रोश भरी आवाज में कहा- कितना अच्छा होता कि हम देवी साधना के माध्यम से ऐसी कपूत संतान के मां-बाप नहीं होते। जिस प्रजा को अपने प्राणों से भी ज्यादा जतन से पाला पोसा, उसी प्रजा की पीड़ा में हमारा लाडला आनंद मनाता है।

महारानी मौन रही। ऐसे समय में क्या बोले, यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। एक ओर प्रजावत्सल पति थे तो दूसरी ओर पुत्र के अपराध की आहट थी। महारानी की आँखों में मात्र भयाकुल चिन्ता की परछाई थी।

रानी की इस सहमी हुई स्थिति को देखकर महाराज कुछ सावधान हो गये। रानी पर आक्रोश निकालना व्यर्थ था। क्योंकि युवराज की करतूतों के लिये महारानी कहीं दोषित न थी।

महाराज ने रानी को कंधों से पकडकर पलंग पर बिठाते हुए कहा- देवी! युवराज हम दोनों को प्रिय है, इतना ही नहीं सम्पूर्ण प्रजा उसे चाहती है, परंतु शायद यह पुष्पचूल नाम से ही कोमल और सुगन्धित है अन्यथा आचरण में तो वह पत्थर की तरह मात्र चोट करने वाला है।

मुझे तुम्हें बताना उचित नहीं लगता पर बताये बिना आखिर कब तक मैं रह सकूंगा। यद्यपि राजपरिषद् से जुड़ा हुआ कोई भी व्यक्ति मुझे कुछ भी बताने को तैयार नहीं है, पर मेरे द्वारा बार-बार पूछने पर मात्र इतना ही कहा कि नादानी वश युवराज कुछ छोटी-छोटी भूलें करते हैं। समय पर

सब कुछ बदल जायेगा पर उनकी बातों से मैं सहमत नहीं हो पाया। क्योंकि मैं पुष्पचूल की नस-नस से वाकिफ हूँ। दूसरे को सताना उसके लिए पराक्रम करना है।

हमने सोचा था- शादी के बाद वह अपनी क्रियाओं में परिवर्तन कर लेगा परंतु, उसमें तो एक प्रतिशत भी कहीं बदलाव नहीं हैं। बहुरानी संस्कारी है अत: पुष्पचूल की प्रत्येक हरकत को सहन कर रही है। अन्यथा कोई दूसरी युवती होती तो आज तक तो क्रोधित होकर क्या-क्या कर लेती परंतु हमारी युवरानी क्रोध करना तो दूर कभी शिकायत भी नहीं करती। पुष्पचूल अपनी नादानी के कारण न ऐसी गुणसम्पन्न बहु की कदर कर पा रहा है और न प्रजा के वात्सल्य को समझ रहा है। महारानी ने अपनी उदासीनता प्रकट करते हुए कहा।

क्या तुमने युवरानी से राजकुमार के चाल-चलन को सुधारने हेतु नहीं कहा?महाराजा ने उदास स्वरों से पूछा।

नहीं, स्वामी! मैंने बहुत बार बहु के सामने पुष्पचूल की आदतों की चर्चा करनी चाही पर हर बार संकोच की बहुत बड़ी दीवार मेरे होठों के सामने खड़ी हो गयी। अलग-अलग कल्पनाऐं मुझ पर हावी हो जाती और मैं चुप्पी साध जाती।

तुम्हारा चिंतन सही है। अपने ही पुत्र की बुराई एक माँ अपनी नई नवेली बहु के सामने कैसे कर सकती है?माँ की ममता भीतर ही भीतर रो सकती है, आंसुओं के घड़े भर सकती है परंतु पुत्र की बुराई करना तो दूर करने की सोच भी नहीं सकती। फिर भी हमारी मजबूरी है पुष्पचूल मेरा पुत्र तो है ही पर इस राज्य का वह होने वाला स्वामी भी है। वही प्रजा को पीडित करेगा तो रक्षा की गुहार कहाँ लगेगी?अभी तक तो उसके अपराध प्रमाणित नहीं हुए है पर आखिर उसकी चतुराई कब तक उसका साथ निभाएगी?यह में तुम्हें स्पष्ट कहना चाहता हूँ कि जब भी उसके अपराध प्रमाणित होंगे वह दंडित होगा। उस समय उसे में स्वयं दण्डित करूंगा। तुम कल्पना करो वह क्षण मेरे लिए कितना वजनी होगा।

आप ऐसा न कहो स्वामी! धर्म की कृपा से ऐसा क्षण जीवन में कभी न आवे कि एक पिंता अपने पुत्र को सजा दे। मैं आपके कर्तव्य के पीछे छिपे वात्सल्य को पहचानती हूँ। प्रभु! मेरे संसार पर रहम करें कहते कहते रानी सिसक पडीं।

राजा स्वयं दु:खी था। वे सोचने लगे देवी ने मुझे चिन्त की प्रसन्नता के लिए पुत्र प्रदान किया है अथवा जीवन को लांछित करने वाला अभिशाप दिया है। महाराजा आज अपने ही विचारों के ..... में ऐसे उलझ गए थे कि न उनकी भोजन की इच्छा थी और न विश्राम की। भोजन की इच्छा तो अब महारानी की भी समाप्त हो गयी थी। पर उसने सोचा मे अपनी क्षुधा का बहाना करके महाराजा को भोजन करा सकती हूँ। कम से कम शारीरिक स्फूर्ति तो बढेगी।

महारानी ने वातावरण की गंभीरता को समाप्त करते हुए कहा-राजन! अपने पुण्य पर विश्वास करें, सब अच्छा होगा अभी सूर्यास्त का समय हो गया है, पहले भोजन के साथ न्याय कीजिए। कब से आपका इंतजार कर रही हूँ।

राजा के होठो पर फीकी मुस्कान फैल गयी। भोजन का भाव तो आज कबका तिरोहित हो चूका था। परंतू वे जानते थे कि रानी उनको भोजन कराये बिना भोजन नहीं करेगी। वे सोचने लगे-प्रकृति ने नारी की रचना करके पुरुष के पथरीले जीवन को वरदान दे दिया है। नारी भक्तिभाव और अपने हृदय के निर्दोष समर्पण से प्रियतम की आधी पीड़ा को समाप्त कर देती है। पति के जीवन के आधे ..... की संवारने की प्रतिज्ञा वह सप्तपदी के अवसर ही अग्नि देवता को साक्षी बनाकर कर लेती है। वह पुरुष के जीवन का जहर भी हंसते हुए पी लेती है। बिना प्रतिदान की अपेक्षा रखे वह ताउम्र अपना सम्पूर्ण सर्वस्व भी हंसते हुए न्योच्छावर कर देती है।

अरे.....अरे.... आप भोजन के लिए उठते-उठते फिर किन विचारों में खो गये। महारानी ने महाराज को हाथ पकड़कर पलंग से उठाते हुए कहा।

नहीं, बस मैं तुम्हारे बारे में ही विचार कर रहा था। तुम्हें पाकर जीवन में जैसे सब कुछ पा गया था। परंतु पता नहीं मेरे सुखों को किसकी नजर लगी जो ऐसा दुष्ट पुत्र मिला, आह भरते हुए महाराज ने कहा।

फिर वही बात। चलिये पहले भोजन कीजिए। (क्रमश:)

अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री का धूलिया नगर में चातुर्मास हेतु प्रवेश समारोह

धूले 11 जुलाई। पूज्य गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य विपुल साहित्य सर्जक मुनि प्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. ठाणा 8 एवं पूजनीया समुदायाध्यक्षा महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया धवल यशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विश्वरत्नाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री रश्मिरेखाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री चारुलताश्रीजी म., पू. साध्वी श्री चारित्रप्रियाश्रीजी म. ठाणा 5 तथा पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री आगमरुचिश्रीजी म. ठाणा 2 आदि विशाल साधु-साध्वी मंडल का चातुर्मास हेतु धूलिया नगर में प्रवेश समारोह आषाढ सुदि 10 गुरुवार ता. 11 जुलाई 2019 को अत्यन्त उल्लास व आनंद के साथ संपन्न हुआ।

शोभायात्रा पूरे नगर में भ्रमण करती हुई श्री शीतलनाथ जिन मंदिर पहुँची, जहाँ परमात्मा व दादा गुरुदेव के दर्शन कर अग्रवाल विश्राम भवन के विशाल पाण्डाल का उद्घाटन समारोह व उसके पश्चात् अभिनंदन समारोह प्रारंभ हुआ।

इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया- चातुर्मास कचरा साफ करने का अनूठा अवसर है। इस अवसर का हमें पूरा-पूरा लाभ उठाना है। अपने जीवन को धर्म आराधना व साधना से जोडना है। उन्होंने कहा- हम नोट भी गिनते हैं और नवकार भी! परन्तु दोनों की गणना की स्थितियों में कितना अन्तर होता है! नोट जितनी जागरूकता व एकाग्रता से गिनते हैं, क्या नवकार गिनते समय उतने एकाग्र रह पाते हैं। नोट व नवकार गिनते समय क्या हमारी मानसिकता एक समान रह पाती है!

उन्होंने कहा- नोट यहीं धरे रह जायेंगे, नवकार न केवल आपके साथ चलेगा, अपितु आपके भविष्य का निर्माण भी करेगा। सकल श्री संघ को एक होकर धर्म आराधना करने का पूज्यश्री ने आह्वान किया।

समारोह का संचालन करते हुए पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा- संसार में बहुत सारी मणियां हैं।

जैसे जलकान्त मणि, पद्मराग मणि, चंद्रकांत मणि, सूर्यकांत मणि पर वे सभी संसार को आलोकित करती है। पर जिनशासन की यह 'मणि' अन्तर्जगत को रोशन करती है। गुरु में देव भी शामिल है। इसलिये उन्हें गुरुदेव कहा जाता है। उन्होंने विविध प्रकार से चातुर्मास एवं गुरु की महिमा का वर्णन किया।

पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. ने फरमाया- पूज्यश्री के इस चातुर्मास का सभी को पूरा-पूरा लाभ लेना है।

पूज्य नूतन दीक्षित मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. व साध्वी श्री आगमरुचिश्रीजी म. का दीक्षा के बाद पहला चातुर्मास-प्रवेश होने से लोगों में अपार उत्साह था। उनके परिवार जन पधारे थे।

प्रारंभ में समस्त अतिथिगणों का अभिनंदन रूप प्रस्तावना धूलिया शीतलनाथ मंदिर संस्थान के अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी नाहर ने प्रस्तुत की।

इस अवसर पर सौ. भावना नाहर, मालेगांव महिला परिषद्, सुरेशजी लूणिया, जाह्नवी छाजेड, प्रा. डॉ. अरूण कोचर, इन्दौर महिला मंडल, केयुप नंदुरबार से अजय डागा, मुमुक्षु रजत सेठिया आदि ने अपने भाव अभिव्यक्त किये। संगीत से शमां बांधा- भरत ओसवाल ने।

संघ की ओर से गुरुपूजन का लाभ लिया मुंबई निवासी जसोल खरतरगच्छ श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी बोकड़िया ने लिया जबकि कामली का लाभ भिवंडी निवासी श्री शंकरलालजी लालन परिवार ने लिया।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा लिखित 'विचार वैभव' नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। जिसका लाभ सिणधरी-मल्हार पेठ निवासी संघवी श्री भीकचंदजी धनराजजी देसाई परिवार ने लिया।

इस अवसर पर बाहर से बडी संख्या में गुरुभक्तों का आगमन हुआ। सूरत, मुंबई, चेन्नई, बाडमेर, बालोतरा, जसोल, मोकलसर, जयपुर, जैसलमेर, ब्यावर, जालोर, जहाज मंदिर, भिवंडी, देपालपुर, अहमदाबाद, बडवाह, मन्दसौर, फलोदी, मल्हारपेठ, सिणधरी, इन्दौर, उज्जैन, चितलवाना, सांचोर, कारोला, मालेगांव, जलगांव, बीकानेर, भीलवाडा, चौहटन, अक्कलकुआं, खापर, वाण्याविहिर, तलोदा, सेलंभा, खेतिया, शहादा, दोंडाइचा, सारंगखेडा, अमलनेर, पूना, रायपुर, दुर्ग, बेरला, तिमनगढ, दिल्ली, जोधपुर आदि कई क्षेत्रों के श्रद्धालुओं का आगमन हुआ। विशेष रूप से कुशल वाटिका के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी छाजेड, जिनहरि विहार पालीताना के महामंत्री श्री बाबुलालजी लूणिया, केयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेशजी लूणिया, इन्दौर से श्री प्रकाशचंदजी मालू, उज्जैन अवन्ति तीर्थ ट्रस्ट मंडल आदि कई संघों व विशिष्ट गणमान्य जनों का आगमन हुआ।

दादा गुरुदेव की पुण्यतिथि मनाई गई

धूले 12 जुलाई। प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी म.सा. की 865वीं पुण्यतिथि धुलिया नगर में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा. आदि साधु-साध्वी मण्डल के सानिध्य में मनाई गई। इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने, पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ने दादा गुरुदेव के गुणगान कर उनके विराट व्यक्तित्व का महिमा-गान किया।

गुरु पूर्णिमा का श्रद्धाभरा आयोजन

धूले 16 जुलाई। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में आषाढ शुक्ला पूर्णिमा को गुरु-पूर्णिमा मनाई गई। पूज्य गुरुदेवश्री ने प्रवचन फरमाते हुए कहा- जिनशासन में गुरु-पूर्णिमा के रूप में स्वतंत्र कोई पर्व नहीं है। भारतीय वातावरण में गुरु पूर्णिमा के रूप में यह पर्व वर्तमान में मनाया

जाता है।

उन्होंने कहा- आज के दिन गुरु के उपकारों का स्मरण करना है। उनके प्रति अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त करनी है। उन्होंने अपने गुरुदेव से संबंधित कई घटनाऐं भी सुनाई।

नूतन दीक्षित पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. ने गुरु महिमा का वर्णन करते हुए कहा- गुरु के आशीर्वाद के अभाव में जीवन का कोई मूल्य नहीं है। उन्होंने कहा- उगते हुए सूर्य का प्रकाश है आप! खिलते हुए पुष्प की सुवास है आप! चहकते हुए पक्षियों की आवाज है आप! जीवन-वायुयान के पथदर्शक हैं आप! आधुनिक मां साइकिल के चक्र में पांव न आ जाए, इसकी चिंता करती है। अध्यात्म की गुरु मां शिष्य भवचक्र में भटक न जाए, इसकी चिंता करती है।

आधुनिक मां आइपोड गिफ्ट करती है, गुरु मां आई एण्ड गोड का संबंध बताती है।

नूतन दीक्षित पूज्य मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. ने कहा- संसार में मणि एवं मनी का महत्व है। ऐसे ही मेरे जीवन में भी मणि एवं मनित का उतना ही महत्व है। गुरु भगवंतों की कृपा मुझे निरंतर मिल रही है। उन्होंने कहा- गुरु आज्ञा को शिरोधार्य करने का ही यह परिणाम है कि मेरे साधु जीवन का पहला चातुर्मास गुरु निश्रा में होने जा रहा है, जो पहले अक्कलकुआं होना था।

पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. ने गुरु-महिमा का विस्तार से वर्णन किया। इस अवसर पर जगद्गुरु मंडल के श्री सतीशजी छाजेड ने भजन प्रस्तुत किया। श्रीमती श्वेता राठोड़ ने भी गुरुभक्ति गीतिका की प्रस्तुति दी। गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु पूजन का लाभ सांचोर निवासी जहाज मंदिर के कोषाध्यक्ष श्री प्रकाशजी छाजेड एवं धोरीमन्ना निवासी श्री सुरेशजी ने लिया।

आज के दिन पूज्यश्री का पूजन करने सूरत, भिवण्डी, मुंबई, जालोर, धोरीमन्ना, अहमदाबाद, मालेगांव आदि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पधारे।

सांचोर में चातुर्मासिक प्रवेश

सांचोर 6 जुलाई। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती एवं शिष्यरत्न पू. मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. सा., पू. मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. सा., सत्यपुर रत्न पू. मुनिराज मोक्षप्रभसागरजी म. सा. ठाणा-3 का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश शनिवार दि. 6 जुलाई 2019 श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ सांचोर के तत्वावधान में हुआ।

प्रात: 07:30 बजे कुशल भवन से सकल श्रीसंघ के साथ बाजते गाजते कुंथुनाथ मंदिर (भोजनशाला) के पास गुरु भगवंतों का भव्य सामैया हुआ। वहां से भव्य शोभायात्रा नगर के विभिन्न राजमार्गों से होते हुए कुशल भवन में धर्मसभा में परिणत हुई।

धर्मसभा में पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. ने अपने प्रवचन में कहा कि परमात्मा महावीर की विचरण भूमि एवं गौतमस्वामीजी के द्वारा उद्घोषित 'जयउ वीर सच्चउरी मंडण' भूमि पर चातुर्मास की हार्दिक प्रसन्नता है। चातुर्मास में आराधना-तपस्या का पुरा लाभ उठाना है। सांचोर के कुलदीपक मुनि मोक्षप्रभसागरजी ने कविता पाठ किया।

ब्रह्मसर तीर्थ में स्वर्णिम चातुर्मास प्रवेश

ब्रह्मसर 4 जुलाई। तृतीय दादा गुरुदेव की दर्शन स्थली पर पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के गुरुभ्राता ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागरजी म.सा., मुनिराज श्री नयज्ञसागरजी म. एवं साध्वीवर्या विमलप्रभाश्रीजी म. की सुशिष्या साध्वी हेमरत्नाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-3 का 4 जुलाई को प्रवेश की शोभायात्रा जगवल्लभ पार्श्वनाथ जिनालय ब्रह्मसर से प्रातः 10 बजे प्रारम्भ हुई। सैकडों की संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने शोभायात्रा में भाग लेकर जिनशासन की शोभा बढ़ाई। चातुर्मासिक प्रवेश को लेकर ग्रामवासियों में अपने गुरु के प्रति जबरदस्त उत्साह था।

प्रवेश के बाद धर्मसभा में गुरुवंदन एवं मंगलाचरण के बाद बीकानेर से पधारे सुनिलजी पारख ने स्वागत गीत व मोतीलाल मालू ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। ब्रह्मसर तीर्थ ट्रस्ट के प्रबंधक मंत्री ज्ञानीरामजी मालू, जोधपुर से मोहनजी रत्नेश, मोतीलालजी मालू, बाबूलालजी छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हम सबको चातुर्मासिक धर्म आराधना से जुड़कर चातुर्मास को ऐतिहासिक बनाना है। उपाध्याय प्रवर व साध्वी मण्डल को काम्बली ओढाने का चढावा वीरचन्द शंकरलाल लालण परिवार भाडखा वाले हाल भिवंडी, व गुरुपूजन का लाभ अमृतलाल नेमीचन्द पारख हरसानी-बालोतरा ने लिया।

उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. ने कहा कि चातुर्मास परिवर्तन का माध्यम बने पुनरार्वतन का नहीं। इस चातुर्मास में 51 दिवसीय चातुर्मास करके कर्मों की निर्जरा करनी है। इसके बाद उपधान तप की आराधना होगी। साध्वी हेमरत्नाश्रीजी म. ने कहा कि अब इस सम्पूर्ण वर्षावास का ज्यादा से ज्यादा लाभ लेकर तप आराधना से आत्मा का कल्याण करने का हम सबका लक्ष्य हो।

संयोजक बाबूलाल छाजेड़ ने पधारे हुए अतिथियों, शोभायात्रा में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग करने वाले संस्थाओं व मण्डलों का आभार व्यक्त किया। प्रवेश समारोह में राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ आदि संघों के पदाधिकारी उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की विभिन्न शाखाओं के सदस्यों, दादा जिनकुशलसूरि ट्रस्ट ब्रह्मसर के सदस्य सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का सफल संचालन मोतीलालजी मालू रामसर ने किया।

जैसलमेर में चातुर्मास प्रवेश

जैसलमेर 10 जुलाई। पूज्य गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि प्रवर श्री मयंकप्रभसागरजी म. एवं पूज्य आर्य मेहुलप्रभसागरजी म. महाराज का जैसलमेर में चातुर्मास हेतु दिनांक 10 जुलाई 2019 को प्रवेश हुआ। गड़ीसर चौराहे पर उनकी अगवानी की गई। पार्श्व महिला मंडल की सदस्यों ने कलश के शकुन देकर नगर-प्रवेश की रस्म अदा की।

प्रवेश शोभायात्रा मुख्य मार्गों से होती हुई संकटहरण पार्श्वनाथजी जिनालय, महावीर भवन स्थित धर्मनाथजी जिनालय, जैन भवन स्थित नमिनाथजी जिनालय के दर्शन कर जैन भवन में धर्मसभा में परिवर्तित हुई।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए आर्य मेहुलप्रभसागरजी ने कहा कि चातुर्मास बरसात की सीजन है। बरसात पर्वत, जंगल, खेत; इस तरह तीनों स्थानों पर बरसती है। पर्वत पर आई बरसात बह जाती है, जंगल में हुई वर्षा झाड़ियां उगाती है तो खेत में हुई वर्षा फसल पैदा करती है। हमें भी इस चातुर्मास में खेत की तरह धर्म की फसल पैदा कर समय को सार्थक करना है।

उल्लेखनीय है कि जैसलमेर में मुनि भगवंतों का चातुर्मास श्रुताराधना के निमित्त से हो रहा है। दुर्ग स्थित खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिनभद्रसूरि ज्ञानभंडार में संरक्षित गुटकों (ग्रंथों) के सूचीकरण आदि कार्य में संलग्न है।

प्रतिदिन प्रवचन महावीर भवन में गतिमान है जिसमें श्रीसंघ के सभी सदस्य पूरा लाभ ले रहे हैं।

प्रेषक- विमल जैन, मुख्य व्यवस्थापक, जैन ट्रस्ट

श्री जैन खरतरगच्छ समाज, दिल्ली के चुनाव संपन्न

रतन बोथरा

ललित श्रीश्रीमाल

मनीष नाहटा

ललित तातेड़

देवेन्द्र सुराणा

दिल्ली 9 जून। श्री जैन खरतरगच्छ समाज, दिल्ली के निर्विरोध चुनाव संपन्न हुए। जिसमें नई कार्यकारिणी का गठन किया गया।

लंबित चुनावों को कराने के लिए सर्वप्रथम पिछली कार्यकारिणी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री हस्तीमलजी बोथरा द्वारा ये सार्थक पहल की गई तथा दिनांक 5 मई 2019 को हुई साधारण सभा में पधारे पूर्व कार्यकारिणी व साधारण सदस्यों ने निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए आमसभा में सहमति दी। सभा में अध्यक्ष पद पर श्री रतनजी बोथरा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री ललितजी श्रीश्रीमाल, कोषाध्यक्ष श्री ललितजी तातेड, महामंत्री श्री मनीषजी नाहटा, सहमंत्री श्री देवेन्द्रजी सुराणा का चुनाव किया गया।

साधारण सभा में श्री नरेशजी डागा जैन को चुनाव आयुक्त बना कर निष्पक्ष चुनाव कराने की जिम्मेदारी को बखूबी निभाया।

बेंगलूरु में चातुर्मास प्रवेश

बेंगलूरु 6 जुलाई। श्री जिनकुशलसूरि जैन आराधना भवन, बसवन- गुडी बैंगलोर में खरतरगच्छा- धिपति पू. आ. श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. साध्वीवर्या डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की विदुषी शिष्याऐं साध्वी डॉ नीलांजनाश्रीजी म., साध्वी विभांजनाश्रीजी म., साध्वी दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा 3 का भव्य चातुर्मास प्रवेश उल्लास के वातावरण में संपन्न हुआ।

प्रवेश शोभायात्रा श्री संभवनाथ जैन मंदिर, वी. वी. पुरम से प्रारंभ हुई जिसमें 25 से ज्यादा मंडलों के साथ श्री जिनदत्त-कुशलसूरि जैन सेवा मंडल, एवं अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद के सदस्यों ने सफल बनाने में सहयोग किया। धर्मसभा में आराधना भवन खचाखच भरा हुआ था। पू. साध्वीवर्याश्री के मांगलिक के पश्चात् श्री महेन्द्रकुमारजी रांका ने सभी मेहमानों एवं गुरुभक्तों का भावभीना हार्दिक स्वागत किया। श्री कुशलराजजी गुलेच्छा ने चातुर्मास को सफल बनाने का निवेदन किया। ज्ञान वाटिका एवं श्री जिनकुशलसूरि जैन धार्मिक पाठशाला के बच्चों द्वारा स्वागत नृत्य, श्री जिनकुशलसूरि जैन महिला मंडल के सदस्यों द्वारा स्वागत गीत, केयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेशजी लूणिया चैन्नई ने धर्म आराधना करने का निवेदन किया।

साध्वीवर्या ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि अपने जीवन के लक्ष्य की ओर रचनात्मक कदम बढाते हुए मंजिल को प्राप्त करने के लिए सत्प्रयास करने चाहिए। धर्म सभा का संचालन करते हुए अरविन्दजी कोठारी ने बताया कि साध्वीवर्याश्री ने 3 महीने में लगभग 1600 किमी का उग्र विहार करके श्री संघ को धर्माराधना कराने एवं परमात्म-भक्ति के रस में भाव विभोर करने यहां पधारी हैं। हम सब ज्यादा से ज्यादा लाभ लेवें।

प्रारंभ में परमात्मा एवं गुरुदेव के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्ज्वलन एवं गुरुपूजन करने का लाभ संघवी श्री विजयराजजी हंसराजजी डोसी परिवार ने लिया। साध्वीवर्याश्री को कांबली वोहराने एवं अक्षतों से बधाने का लाभ संजुदेवी जीवराजजी कल्पेशकुमारजी लुंकड परिवार मोकलसर ने लिया। ट्रस्ट मंडल ने स्वामीवात्सल्य के लाभार्थी श्रीमती शांतिदेवी लालचंदजी गोठी परिवार का बहुमान किया।

नई कार्यकारिणी गठित

बेंगलूरु। श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुडी, बेंगलूरु की साधारण सभा संपन्न हुई जिसमें निर्भयलालजी गुलेच्छा को सर्वसम्मति से ट्रस्ट का अध्यक्ष चुना गया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष निर्भयलालजी गुलेच्छा ने सभी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने उपाध्यक्ष पद पर बाबूलालजी भंसाली एवं मिठालालजी भंसाली, महामंत्री पद पर संघवी कुशलराजजी गुलेच्छा, सहमंत्री तेजराजजी मालानी एवं गजेंद्रजी संकलेचा, कोषाध्यक्ष रणजीतमलजी ललवानी एवं अरविन्दजी कोठारी को संघ का प्रवक्ता नियुक्त किया। इसके साथ ही महेंद्रकुमारजी रांका, घेवरचंदजी साकरिया, तेजराजजी गुलेच्छा, तिलोककुमारजी बोथरा एवं विजयराजजी डोसी को सलाहकार नियुक्त करने की घोषणा की। प्रकाशचंदजी भंसाली, मेवारामजी मालू, सुरेन्द्रकुमारजी रांका, महेशभाई पारेख, मोटमलजी जैन, लाभचंदजी मेहता, अशोकभाई शाह, बाबूलालजी भोजानी, नरेंद्रकुमारजी पारख, महेंद्रकुमारजी छाजेड़, पुखराजजी कवाड, बाबूलालजी मेहता, गणपतलालजी दांतेवाड़िया को कार्यकारिणी सदस्य नियुक्त किये गए। नवनियुक्त महामंत्री

अध्यक्ष

मंत्री

संघवी कुशलराजजी गुलेच्छा ने सभी को धन्यवाद देते हुए कहा कि 3 वर्ष के लिए नियुक्त इस कार्यकारिणी समिति को संघ प्रभावना के उत्कृष्ट कार्यों द्वारा जिनशासन का गौरव बढ़ाना है।

स्नात्र महोत्सव का आयोजन

बेंगलूरु 28 जुलाई। श्री जिनकुशलसूरि जैन आराधना भवन बसवनगुड़ी में पूज्य साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. के उपदेश से स्नात्र पूजा का आयोजन भव्य रूप से किया गया। इस मंगलकारी स्नात्र पूजा की रचना एक भवावतारी महोपाध्याय श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज ने प्रायः तीन सौ वर्ष पूर्व की थी, प्रभु के पंच कल्याणकों में से एक जन्म कल्याणक सौधर्मेन्द्र द्वारा मेरु पर्वत पर चौसठ इन्द्रों के द्वारा मनाया जाता है, उसी की प्रतिकृति स्वरूप संगीतमय स्टेज कार्यक्रम के साथ आराधना भवन में आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में ट्रस्ट मंडल के अनेक पदाधिकारियों के साथ चैन्नई, तिरपात्तूर आदि स्थानों से अनेक सदस्यों की उपस्थिति रही।

इचलकरंजी में चातुर्मासिक प्रवेश

इचलकरंजी 11 जुलाई। अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पूजनीया माताजी म. साध्वी श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 का चातुर्मासिक प्रवेश हर्षोल्लास एवं धुमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। हल्की फुंहारों के साथ इंद्र महाराज ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

रंग-बिरंगी रंगोलियों, तोरण द्वारों से होते हुए भव्य शोभायात्रा में अपने मंडल की वेशभुषा से सुसज्जित नौ महिला मंडलों ने गुरुवर्याश्री का सामैया किया। प्रथम सामैया का लाभ ओमप्रकाशजी छाजेड परिवार, प्रथम गहुँली का लाभ संघवी ऋषभलालजी छाजेड परिवार, संघ तिलक का लाभ बाबुलालजी तेजराजजी लुंकड परिवार ने लिया।

मणिधारी महिला परिषद्, खरतरगच्छ महिला परिषद् ने उत्साह एवं भक्तिभाव के साथ गुरुवर्याओं का मणिधारी भवन में प्रवेश कराया। मणिधारी भवन में आयोजित धर्मसभा में रमेश लुंकड ने मंच संचालन करते हुए गुरुवर्याश्री के गुणों की सारगर्भित व्याख्या की। संघ अध्यक्ष श्री अशोकजी बोहरा ने स्वागत भाषण, पूर्व अध्यक्ष संपतराजजी संकलेचा ने गुरुवर्याश्री के उपकारों का वर्णन व स्वागत गीत मणिधारी महिला परिषद् ने प्रस्तुत किया। केयुप अध्यक्ष श्री सुरेशजी ललवानी ने कहा- यह चातुर्मास जीवन परिवर्तन का माध्यम बने। खरतरगच्छ महिला परिषद, अरिहंत महिला मंडल, गुरुवर्याश्री के सांसारिक लुंकड परिवार से सौ. मधु लुंकड एवं सौ. पूनम लुंकड, एवं ज्ञान वाटिका के बच्चों ने नृत्य के द्वारा गुरुवर्याश्री का स्वागत किया।

खुशालचंदजी बागरेचा, कपुरजी पंडितजी ने भाव अभिव्यक्त किये। सौ. कविताजी ललवानी, कु. श्रद्धा लुंकड एवं श्री रमेशजी भंसाली ने गुरु भक्ति गीत द्वारा प्रस्तुति दी। काम्बली का लाभ बाडमेर निवासी श्री दिनेशकुमारजी बाबुलालजी बोथरा परिवार एवं गुरुपूजन का लाभ शा. सुमेरमलजी प्रवीणकुमारजी ललवानी परिवार ने लिया। प्रवेश दिवस के साधर्मिक भक्ति के लाभार्थी श्री पुखराजजी उदयचंदजी ललवानी परिवार का बहुमान किया गया। संघ के उपाध्यक्ष श्री मगराजजी भंसाली ने गुरुवर्याश्री के प्रति कृतज्ञता, अतिथियों का स्वागत एवं खरतरगच्छ युवा परिषद् द्वारा प्रदत्त विहार-वैयावच्च में अनुकरणीय सेवाओं की अनुमोदना के साथ आभार प्रकट किया।

बहिन म. डॉ. साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि इस चातुर्मास में रत्नत्रयी की आराधना एवं रत्नत्रय को जीवन में साकार करना है। यह चातुर्मास आत्म कल्याणकारी, मंगलकारी एवं आध्यात्मिक हो ऐसा विश्वास व्यक्त किया।

बीकानेर में चातुर्मास प्रवेश

बीकानेर 11 जुलाई। खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तीनी संघरत्ना प्रवर्तिनी साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा व साध्वी संयमपूर्णाश्रीजी म.सा. ने चातुर्मासिक प्रवेश उत्साहित सकल संघ की उपस्थिति में किया।

गोगागेट के गौड़ी पार्श्वनाथ जैन मंदिर से रवाना हुई शोभायात्रा में बैंड, श्रावक-श्राविकाएं वरघोड़ा करीब तीन घंटे की 27 गवाड़ों में भ्रमण के पश्चात् ढड्ढा कोटड़ी में धर्मसभा में बदल गया। समारोह में प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ने कहा कि भगवान महावीर के संदेश, उपदेश, प्राणी मात्र के लिए कल्याणकारी है। जिनवाणी सुख व अमृत की वर्षा करने वाली शक्तिप्रदायक है। भगवान महावीर के बताएं सिद्धान्तों को आत्मसात करें। साध्वीश्री सौम्यगुणाश्रीजी ने कहा कि चातुर्मास के दौरान जैनत्व की गरिमा को बनाएं रखे, अधिकाधिक समय धर्म, ध्यान, जप, तप में लगाएं।

समारोह में अतिथि के रूप में भारतीय प्रशासनिक सेवा के प्रशिक्षु अधिकारी व नगर निगम उपायुक्त अभिषेक सुराणा, महापौर नारायण चौपड़ा सहित दिल्ली व अन्य स्थानों के खरतरगच्छ संघ के पदाधिकारी मौजूद थे। उनका स्वागत वरिष्ठ श्रावक केसरीचंदजी सेठिया, झंवरलालजी सेठिया, महावीरजी नाहटा, रतनलालजी नाहटा, अशोकजी पारख, कृष्ण लूणिया, दिल्ली के झंवरलालजी मुसरफ, खरतरगच्छ युवा परिषद के अध्यक्ष राजीव खजांची व अन्य पदाधिकारियों ने किया। साध्वीजी का गुरुपूजन व कांबली ओढ़ाने का लाभ कोलकाता निवासी उदयचंदजी, निर्मलजी कोचर परिवार बीकानेर-कोलकाता निवासी ने लिया। लाभार्थी परिवारों का व स्वामीवात्सल्य लाभार्थी कन्हैयालालजी, महावीरकुमारजी नमनकुमार नाहटा का स्वागत किया गया।

समारोह में सुनील पारख, मगन कोचर, विचक्षण महिला मंडल, सामायिक मंडल, दिल्ली के सुमेन्द्र जैन, अजीमगंज के अमित बोथरा, दिल्ली की अंजली, फलौदी की विनिता बच्छावत, केसरीचंद सेठिया, खुशबू नाहटा आदि ने गीतिका व भावों के माध्यम से साध्वीवृंद का अभिनंदन किया।

फलोदी में चातुर्मास प्रवेश

फलोदी 4 जुलाई। पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की विदुषी शिष्या पूज्या गच्छगणिनी मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा., साध्वीवर्या हर्षप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा-5 का 23 साल बाद फलोदी नगर में ऐतिहासिक चातुर्मास का भव्य प्रवेश हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। हर जगह धूमधाम से बाजे-गाजे के साथ हुआ प्रवेश की शोभायात्रा एवं जगह-जगह महिलाओं ने अक्षत से गुरुवर्याश्री को बधाया। धर्मसभा में प्रवचन, प्रभावना एवं विविध आयोजन किए गए।पूजनीया गणिनी म. का अपनी जन्म भूमि में यह चातुर्मास होने जा रहा है, अत: संघ में अपार उत्साह व उल्लास था।

रायपुर में चातुर्मास प्रवेश

रायपुर। अध्यात्मयोगी पूज्य मुनिश्री महेंद्रसागरजी म.सा. एवं युवामनीषी मुनिश्री मनीषसागरजी म. आदि मुनिगणों का भव्य शोभायात्रा के साथ श्री जिनकुशलसूरि जैन दादाबाड़ी, एमजी रोड में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। शोभायात्रा जैन मंदिर सदर बाजार से प्रारंभ होकर अहिंसा स्तम्भ-कोतवाली चौक, मालवीय रोड, जयस्तंभ चौक, शारदा चौक होकर जिन-शासन की जय-जयकार के स्वरों के साथ जैन दादाबाड़ी पहुंची।

मंगल प्रवेश यात्रा जैन दादाबाड़ी पहुंचते ही श्रद्धालुओं द्वारा मुनि भगवंतों का विधिवत अभिनंदन-स्वागत किया गया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए पूज्य मुनिश्री महेन्द्रसागरजी ने कहा कि यह चातुर्मासिक आराधना सार्थक तभी होगी जब हम इसमें स्वयं का प्रवेश कराएं।

युवामनीषी श्री मनीषसागरजी म. ने कहा कि व्यक्ति स्वयं को सुधारने अर्थात् सुधरने का मानस नहीं बनाएगा तब तक चाहे कितने ही चातुर्मासों में जाओ, जप-तप कर लो जीवन में कुछ परिवर्तन होने वाला नहीं है। चातुर्मास काल में हमें पूरी जागृति व अनुशासन के साथ अपने तन-मन और प्राणों को धर्ममय बनाकर जिनशासन के लिए लगाना है। साध्वीवर्या श्री चंदनबालाश्रीजी ने संबोधित करते हुए गुरुमहिमा और गुरु के उपकारों पर प्रकाश डाला। मंच संचालन प्रभारी सुशील कोचर ने किया।

सभा में प्रेमजी चोपड़ा, निपुणा बालिका मण्डल, संभवनाथ महिला मण्डल विवेकानंद नगर, खरतरगच्छ युवा परिषद के अध्यक्ष सुरेश भंसाली, निपुणा आराधक बहु मंडल, डॉ. प्रियंका बैद, भानू लूनिया आदि ने संगीतमयी मधुर प्रस्तुतियां दीं। वहीं राजेश सावनसुखा ने कविता के माध्यम से सद्गुरू की महिमा की। -तरूण कोचर

मुंबई में चातुर्मासिक प्रवेश

धर्मनगरी मुंबई में श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ सांचोर के तत्त्वावधान में पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की आज्ञानुवर्तिनी पूज्या धवल यशस्वी साध्वीवर्या श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की सुशिष्याएं पू. साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म., पू. साध्वी तत्वज्ञलताश्रीजी म. एवं पू. साध्वी संयमलताश्रीजी म. का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश धूमधाम पूर्वक हुआ।

शुभ वेला में खरतरगच्छ भवन, नानूभाई देसाई रोड से प्रारंभ शोभायात्रा शहर के मुख्यमार्गों से होती हुई कपोलवाड़ी पहुंची जहाँ धर्मसभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुंबई के अलावा भिवंडी, सूरत, इचलकरंजी, बालोतरा आदि कई स्थानों से आगंतुकों का आगमन हुआ। श्रीसंघ के सचिव एवं चातुर्मास संयोजक श्री मिलापजी बोथरा ने सभा का संचालन करते हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया।

सभा में जिनशासन रत्न विधायक श्री मंगलप्रभातजी लोढ़ा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। धर्मसभा में संघ के अध्यक्ष श्री चुन्नीलालजी जैन, उपाध्यक्ष श्री जीवराजजी जैन, भूतपूर्व अध्यक्ष श्री प्रकाशजी कानूगो, श्री मांगीलालजी मौलानी, श्री अमृतलालजी कटारिया संघवी (अध्यक्ष - श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, मुंबई), श्री अनिलजी छाजेड़ (अध्यक्ष-खरतरगच्छ संघ भिवंडी), अशोकजी मौलानी, चम्पालालजी वाघेला, धनपतजी कानुँगो, मोतीलालजी जैन, मुकेशजी मरडिया, कल्पेश अरणाईया, प्रणय जैन, मुमुक्षु रवीना जैन, मुमुक्षु नेहा जैन, श्रीमती नीलम जैन आदि ने अपने हृदय के उद्गार प्रकट किये। सांचोर खरतरगच्छ महिला मंडल एवं खरतरगच्छ महिला परिषद् मुंबई द्वारा सुमधुर कंठ से स्वागत गीत गाया गया। बालिका परिषद् द्वारा प्रस्तुत स्वागत नृत्य से सभी मंत्रमुग्ध हो गए। मुमुक्षु बहनों का अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम के अंत में संघ के सचिव मिलापजी बोथरा ने सभी का आभार प्रकट किया।

-धनपत कानुंगो, मुंबई

गिरनार महातीर्थ में भव्य प्रवेश

जुनागढ 14 जुलाई। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञांकिता पू. पार्श्वमणि तीर्थप्रेरिका गणिनी प्रवरा गुरुवर्या सुलोचनाश्रीजी म., पू. तपोरत्ना सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा 17 का 325 आराधकों के साथ दि. 14 जुलाई को पू. आचार्य श्री प्रद्युम्नविमलसूरिजी म., पू. आचार्य श्री राजचन्द्रसूरिजी म., पू. आचार्य श्री हार्दिकरत्नसूरिजी म., पू. आचार्य श्री कवीन्द्रसागरसूरिजी म. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में भव्य रूप से सम्पन्न हुआ।

प्रवेश का जुलुस तलेटी से प्रारंभ होकर घोडे, रथ, बग्गी, अनेक बैंड आदि के साथ अपार जनमेदिनी के जयकारों के साथ कच्छी भवन पहुंचा। पू. आचार्य भगवंतों के मंगल आशीर्वाद रूप मांगलिक हुआ। तत्पश्चात् मंदिरजी में चैत्यंवदन के बाद धर्मसभा का प्रारंभ पू. गुरुवर्याश्री के मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम का संचालन संगीतकार अशोकजी गेमावत ने किया। स्वागत गीत सुशीलाजी गोलेच्छा रायपुर ने मधुर-स्वर से गाया। साध्वी प्रियशुभांजनाश्रीजी ने अपनी जोशीली वाणी से आराधकों को धर्म के तीन टिप्स बताएं। साध्वी प्रियवीरांजनाश्रीजी म., साध्वी प्रियकृपांजनाश्रीजी म. ने गुरु चरणों में समर्पण का भजन गाया। साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. ने आराधकों को कहा- नेमिनाथ भगवान की असीम कृपा और पू. गुरुवर्याश्री के आशीर्वाद से इस पावन भूमि में आपको आराधना करने का एक सुन्दर अवसर मौका मिला है। सबको आपस में प्रेमभाव से आराधना में एकाग्र बनना हैं।

साध्वीवर्या प्रियकल्पनाश्रीजी म. ने बताया आपके नगर में जो आराधना करते है उससे शतगुणा अधिक लाभ तीर्थक्षेत्र में करने से मिलता है। पू. साध्वी सुलक्षणाश्रीजी म. ने गिरनारजी तीर्थ की महिमा और यहाँ की हुई आराधना का फल बताया। अन्त में पू. गुरुवर्याश्री ने फरमाया कि नेमिनाथ प्रभु की शीतल छांव में वर्षावास करने का सुन्दर अवसर मिला है। यहाँ आकर सभी मिलजुलकर, सहयोगी बनकर आराधना करें। गिरनारजी तीर्थ की धरा पर खरतरगच्छ परंपरा का पहला चातुर्मास हो रहा है।

अंतिम मांगलिक के पूर्व आयोजक परिवारों ने सबका तहेदिल से स्वागत करके आभार व्यक्त किया। आप लोगों के कारण ही हमें आराधना करवाने का अवसर मिला है।

अहमदाबाद भव्य चातुर्मास प्रवेश

अहमदाबाद 10 जुलाई। खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीस्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी चंपाकली गणिनीवर्या सूर्यप्रभाश्रीजी म. सा. की चरणाश्रिता स्नेहसुरभि साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 का अहमदाबाद के शाहीबाग में चातुर्मासिक प्रवेश का भव्य कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

भारी जनमेदिनी की उपस्थिती में राजस्थानी समाज का क्षेत्र शाहीबाग का माहौल उत्साह-उमंग से भर गया। अहमदाबाद खरतरगच्छ संघ के तत्वावधान में प्रवेश का वरघोड़ा तेरापंथ भवन से प्रारम्भ होकर प्रमुख मार्ग से होते हुए शाहीबाग के घासीराम चौधरी भवन के प्रांगण में पहुंचकर धर्मसभा के रूप में परिवर्तित हुआ।

वरघोड़े में उमडे जन सैलाब के साथ विभिन्न मंडल तथा बैंड-बाजो तथा महिला परिषद्, बालिका परिषद् आदि मंडलों के सदस्यों ने उत्साह का वातावरण निर्मित किया। बालिका मंडल द्वारा गीत संगीत के साथ नृत्य प्रदर्शन से उल्लास का वातावरण बना।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विदुषी साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. ने कहा कि चातुर्मास में धर्म आराधना के माध्यम से आत्मा के मैल को धोना है। कल्पनाबेन शाह भुज निवासी ने मंच का संचालन करते हुए चातुर्मास की रूपरेखा प्रस्तुत की। कांबली ओढ़ाने का लाभ सांसारिक परिवार श्री जेठमलजी डूंगरचंदजी कवाड़ बल्लारी निवासी ने लिया। इस अवसर पर गुरुभक्त श्री रमेशकुमारजी बाफना हुबली सहित कई अतिथिओं का बहुमान किया गया।

कार्यक्रम में जिनकुशलसूरि दादावाड़ी के अध्यक्ष संघवी श्री वंशराजजी भंसाली, खरतरगच्छ पेढ़ी के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री दीपचंदजी बाफना, खरतरगच्छ युवा परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय चेयरमेन श्री अशोकजी भंसाली, जिनहरि विहार धर्मशाला पालीताना के सचिव श्री बाबूलालजी लूणिया तथा कोषाध्यक्ष श्री पुखराजजी तातेड, अहमदाबाद खरतरगच्छ दादावाड़ी नवरंगपुरा के ट्रस्टी श्री रतनलालजी बोहरा (हालावाले), श्रीमान चंपालालजी मंडोवरा, जीतो के पूर्व सचिव श्री कुशलजी भंसाली, खरतरगच्छ युवा परिषद् अहमदाबाद के अध्यक्ष श्री रतनलालजी बोथरा, वैयावच्च प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री भेरूभाई लूणिया आदि समाज के गणमान्य बंधु उपस्थित थे।

प्रवेश कार्यक्रम में अनेक नगरों से गुरुभक्त पधारें।

'सिद्धचक्र पद वंदो रे' नाटिका आयोजित

पू. स्नेहसुरभि श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी मधुरिमाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 की पावन निश्रा में 'सिद्धचक्र पद वंदो रे' श्रीपाल राजा मयणासुंदरी की नाटिका भव्य रूप से आयोजित हुई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण से हुआ। उसके बाद बालिका मंडल द्वारा नृत्य, श्रीपाल राजा और मयणासुंदरी कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ।

मुम्बई से पधारी नाटिका निर्देशिका श्रीमति प्रेमलता बेन बाबुलालजी ललवानी ने इस कार्यक्रम की तैयारी करवाई।

पूज्या गुरुवर्याश्री के प्रवचन के दौरान बताया कि जो सिद्धचक्र यह संसार चक्र को भेदने वाला है कर्मो के चक्र को तोड़ने वाला है! जिस प्रकार मयणा, श्रीपाल ने इसकी विधिवत् आराधना साधना करके कोढ़ रोग को मिटा दिया! इसी सिद्धचक्र के प्रभाव से श्रीपाल अपार रिद्धि-सिद्धि को प्राप्त किया और अंत में मोक्ष सुख को प्राप्त करेंगे!

सभा में 'कर्मो करेला मुजने नडे छे' गीत पर नृत्य हुआ जिसे प्रिंसी शाह, हिरल शाह, भूमि शाह ने किया। उसके बाद बाहर गांव से पधारे मेहमान एवं भुज खरतरगच्छ संघ के ट्रस्टी दिनेशभाई एवं मुकेशभाई, किरीटभाई शाह का संघ की ओर से बहुमान किया गया। अंत में स्वामीवात्सल्य का लाभ बाफना परिवार असाड़ा वालो ने लिया। **-अंकित बोहरा**

उदयपुर में चातुर्मास प्रवेश

उदयपुर 4 जुलाई। पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की आज्ञानुवर्तिनी एवं पूजनीया छतीसगढ शिरोमणि गुरुवर्या श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी अभ्युदयाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी स्वर्णोदयाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी सत्वोदयाश्रीजी म.सा. ठाणा 3 का सूरजपोल के बाहर उदयपुर स्थित श्री जिनदत्तसूरि दादावाड़ी के समीप आराधना भवन में चातुर्मासिक भव्य प्रवेश सकल संघ की उपस्थिति में उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

-दलपतसिंह डोसी

राजनांदगांव में चातुर्मास प्रवेश

राजनांदगांव 10 जुलाई। पूज्या प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म., श्री शशिप्रभाश्रीजी म. सा. की विदुषी शिष्या पूज्या साध्वीवर्या सम्यग्दर्शनाश्री जी म.सा. साध्वी कनकप्रभाश्रीजी म.सा. आदि सहित राजनांदगांव की कुलदीपिका साध्वी संवरबोधिश्रीजी म. आदि ठाणा 7 का छत्तीसगढ़ की संस्कार धानी राजनांदगांव में चातुर्मासार्थ प्रवेश उत्साहपूर्ण वातावरण में ट्रस्टी अजय सिंघी के निवास स्थान से नगर के मुख्य बाजार से होता हुआ श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर में प्रभु दर्शन उपरांत जैन बगीचे में हुआ।

धर्मसभा में पूजनीया साध्वीवर्या का मंगलाचरण एवं देव गुरु के स्मरण के पश्चात प्रवचन हुआ। चातुर्मास में तप त्याग की सीजन को समझकर अपनी आत्मा को पावन बनाने का, पुरुषार्थ करने का उपदेश दिया।

दुर्ग में चातुर्मास प्रवेश

दुर्ग 8 जुलाई। अष्टापद तीर्थप्रेरिका साध्वीरत्ना जिनशिशु प्रज्ञाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा का दुर्ग के श्री सुधर्म पौषधशाला में चातुर्मासिक आराधना हेतु प्रवेश हुआ। जैनम हाइट से सुबह वरघोड़ा गरिमामय वातावरण में प्रारंभ होकर भारत के अनेक राज्यों से साधर्मिक भाई बहन की उपस्थिति में धर्मसभा में बदला। साध्वीश्री ने चातुर्मास की महत्ता बताते हुए आराधना में जुडने का उपदेश दिया। सकल संघ व अष्टापद तीर्थ के अध्यक्ष श्री आदरकुमारजी भंसाली, मंत्री श्री रवीन्द्रजी श्रीमाल और ट्रस्ट मंडल के अनेक सदस्य इस अवसर पर सम्मलित हुए।

नंदुरबार में पुण्यतिथि का आयोजन

नंदुरबार 12 जुलाई। जिनशासन के महान उपकारी, शिथिलाचार उन्मूलक, कलिकाल कल्पतरु, लाखों नूतन जैन निर्माता, प्रथम दादागुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी म. सा. की 865वीं पुण्यतिथि (आषाढ सुद ११) के उपलक्ष्य में गुणानुवाद सभा आयोजित की गई।

पू. आचार्य श्री पुण्यरत्नसूरीश्वरजी म.सा. एवं प्रवचनकार पू. आचार्य यशोरत्नसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा गुणानुवाद किया गया। गुणानुवाद के बाद दादागुरुदेव के फोटो पर माल्यार्पण और वासक्षेप पूजन का लाभ सौ. बकुलाबेन भीमराजजी कवाड़ (मोकलसर) परिवार को मिला और दीप प्रज्ज्वनल का लाभ जिनकुशल सामयिक मंडल को मिला। गुणानुवाद सभा में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद-नंदुरबार शाखा के सभी सदस्यें की भी उपस्थिति थी।

नीमच में शासन प्रभावना

चातुर्मास प्रवेश

नीमच 4 जुलाई। मालवज्योति स्पष्टवक्ता साध्वी गुणरंजनाश्रीजी म. का नगर में चातुर्मास के लिए मंगल प्रवेश संपन्न हुआ। प्रवेश जुलूस प्रमुख मार्गों से होता हुआ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ पद्मावती धाम ट्रस्ट शक्तिनगर पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हुआ। जुलूस में बैंडबाजों, समाज जन, नवयुवक मंडल एवं नाकोड़ा मित्र मंडल आदि सभी की रौनक दर्शनीय थी।

धर्मसभा में पूर्व राज्यसभा सदस्य रघुनंदन शर्मा ने कहा कि साध्वीश्री के आगमन से यह स्थान पवित्र हो गया है। अब चार माह तक यहँ अमृत ज्ञान की वर्षा होगी। भीलवाड़ा से आए पूर्व कैबिनेट मंत्री चंद्रराज सिंघवी ने कहा कि हमारा जीवन धर्म के काम आ जाए तो हम धन्य हैं। जावद विधायक ओमप्रकाश सकलेचा ने कहा आज बहुत गर्व का क्षण है। अगले चार माह चातुर्मास में अपने जीवन को सफल बनाए। विधायक दिलीपसिंह परिहार ने कहा चार्तुमास अपने जीवन में परिवर्तन लाता है। जिसे अपने जीवन में आत्मसात करें। नपा अध्यक्ष राकेश पप्पू जैन ने कहा कि जैन समाज का गौरव पूरे देश में हैं। महंत मोहनशरण शास्त्री, निर्मल शरण, लालचंद पाटीदार हाड़ी पिपलिया, राजेन्द्र संघवी, चन्द्रराज संघवी, रघुराजसिंह चौरड़िया ने भी विचार व्यक्त किये।

गुड मार्निंग इंडिया जयपुर की बहनों ने गीतिका, राजेन्द्र बम्बोरिया ने कविता प्रस्तुत की। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ पद्मावती धाम ट्रस्ट शक्तिनगर बघाना के अध्यक्ष राकेश आंचलिया, चातुर्मास समिति के प्रीतमचंद खिमेसरा, प्रेमप्रकाश जैन, मनोहरसिंह लोढ़ा, शौकीन जैन, लाला पाटीदार, संजय बेगानी सहित बड़ी संख्या मे समाजजन मौजूद थे।

सभा में नवकारसी एवं स्वामीवात्सल्य के लाभार्थी रुक्मिणीबाई स्व. जगन्नाथजी कोठारी नलखेड़ा वाले परिवार का शॉल, श्रीफल एवं चुनरी प्रदानकर सम्मान किया।

अखण्ड ज्योत व आराधना भवन का उद्घाटन

नीमच 7 जुलाई। श्री आदिनाथ जिनालय एवं जिनकुशलसूरि खरतरगच्छ जैन दादावाड़ी (स्पेन्टा पेट्रोल पंप के पास) पर पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तीनी पू. प्रवर्तिनी प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या वाणीसिद्ध साध्वी विजयेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या मालवा ज्योति साध्वी गुणरंजनाश्रीजी म. की निश्रा में चारों दादा गुरुदेव के धाम द्वारा लाई गई अखण्ड ज्योत का प्रज्ज्वलन एवं आराधना भवन के निर्मित कमरों का उद्घाटन लाभार्थी परिवार स्व. श्री कुबेरसिंहजी बरड़िया की स्मृति में श्री शरदकुमारजी सुनीलकुमारजी बरड़िया सीतामऊ वालों द्वारा रविवार 7 जुलाई को श्रीसंघ की उपस्थिति में किया गया।

अखण्ड ज्योत का जुलूस प्रात: 8 बजे लाभार्थी परिवार के निवास स्थान टीचर कालोनी से निकलकर आदिनाथ जिनालय एवं जिनकुशलसूरि खरतरगच्छ जैन दादावाड़ी पर पहुंचा एवं वहीं श्री संघ की उपस्थिति में दादागुरु की अखण्ड ज्योत का प्रज्ज्वलन एवं आराधना भवन का उद्घाटन किया गया। दादा गुरुदेव की संगीतमय बड़ी पूजा रखी गई।

–सुनील गोपावत

जयपुर में चातुर्मास प्रवेश

जयपुर । पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं पूजनीया छत्तीसगढ शिरोमणि श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या कोकिलकंठी साध्वी संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा–3 का श्वेतांबर जैन श्रीमाल सभा की अगुवाई में एमडी रोड स्थित दादाबाड़ी में जुलूस के साथ प्रवेश हुआ। इस मौके पर साध्वीजी ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए चातुर्मास के महत्त्व पर प्रकाश डाला। धर्मसभा में मुख्य अतिथि अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (पुलिस मुख्यालय) राजीव दासोत, पूर्व गृहमंत्री गुलाबचंदजी कटारिया ने म.सा. से आशीर्वाद लिया। श्रीमाल सभा अध्यक्ष सुनील जैन, संघमंत्री शांतिचंद जरगड़ आदि मौजूद थे।

पोकरण में प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

पोकरण 4 जुलाई। पूज्य गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि प्रवर श्री मयंकप्रभसागरजी म. एवं पूज्य आर्य मेहुलप्रभसागरजी म. की निश्रा में श्री जैसलमेर लोद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में मूलनायक परमात्माओं का उत्थापन किए बिना संपन्न शास्त्रशुद्ध जीर्णोद्धार के पश्चात् ध्वजदण्ड, ध्वजारोहण, कलश एवं देव-देवी प्रतिष्ठा महोत्सव विधि-विधान के साथ संपन्न हुआ।

प्रतिष्ठा महोत्सव में प्रातः कुंभ स्थापना, दीपक स्थापना, अभिषेक पूजन, देवी पूजन एवं मुद्रा विधान किया गया।

शांति पार्श्वनाथ जिनालय में पार्श्वयक्ष की प्रतिमा एवं आदिनाथ जिनालय में गोमुख यक्ष की प्रतिमा भराने का लाभ श्री भंवरलालजी मोहिनीदेवी परिवार पादरु-चैन्नई वालों ने लिया। जिसकी श्री जैसलमेर लोद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर ट्रस्ट द्वारा अनुमोदना की गई।

प्रतिष्ठा महोत्सव में जैन ट्रस्ट जैसलमेर के उपाध्यक्ष श्री सुभाषजी बाफना, पूर्व अध्यक्ष श्री महेंद्रजी भंसाली, पूर्व अध्यक्ष श्री किशनचंदजी बोहरा, सहमंत्री श्री नेमिचंदजी बागचार, मुख्य व्यवस्थापक विमलजी जैन, पोकरण एसडीएम श्री अनिलजी जैन सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे।

ध्यातव्य है पोकरण में तीन जिनालय अवस्थित है जिनका संचालन जैन ट्रस्ट जैसलमेर करता है। इन जिनालयों की गणना जैसलमेर पंचतीर्थी में होती है। तीनों जिनालयों में दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरिजी एवं जिनकुशलसूरिजी की प्राचीन चरणपादुका प्रतिष्ठित है।

प्रेषक- विमल जैन, मुख्य व्यवस्थापक, जैन ट्रस्ट

मोकलसर में प्रवेश के साथ आराधना भवन का उद्घाटन

मोकलसर 11 जुलाई। मोकलसर में पूज्या प्रखर व्याख्यात्री साध्वीवर्या हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या साध्वीवर्या कल्पलताश्रीजी म.सा. का भव्य चातुर्मासार्थ प्रवेश एवं गुलेच्छा परिवार द्वारा निर्मित श्री हीराजी गुलेच्छा जैन आराधना भवन का उद्घाटन बड़ी ही भव्यता के साथ संपन्न हुआ।

अनेक अश्व, बैंड, ढोल, परमात्मा के रथ एवं विशाल जन समुदाय से सुसज्जित शोभायात्रा श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी से शुरू होकर विभिन्न मार्गों से गुजरते हुए एवं श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ जिनमंदिर में दर्शन चैत्यवन्दन के पश्चात नूतन आराधना भवन में प्रविष्ट हुई। साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा ने ओम् पुण्याहं... प्रियंतां के मंत्रोच्चार द्वारा नूतन आराधना भवन का उद्घाटन करवाया। गुलेच्छा परिवार के श्री चुन्नीलाल निर्भयलाल भँवरलाल कांतिलाल लालचंद तनसुखराज देवीचंद महेंद्रकुमार रमेशकुमार आदि ने समस्त साध्वीमंडल एवं सकल संघ को नए आराधना भवन में प्रवेश हेतु मनुहार कर आमंत्रित किया। शिलालेख का अनावरण सरपंच कांतिलालजी बाफना ने किया।

स्वागत समारोह में भंवरलाल गुलेच्छा, हनवंतराज गुलेच्छा, तनसुखराज गुलेच्छा, भूपतजी खांटेड, गौतम गुलेच्छा आदि ने अपने उद्गार व्यक्त किए। राजेंद्र गुलेच्छा ने स्वागत गीत की भावमय प्रस्तुति देकर सबको झूमा दिया। पूजा एवं यशोदा गुलेच्छा ने भी गीतिका प्रस्तुत की। स्वागत समारोह का सुंदर संचालन जैन संघ मोकलसर के सचिव संतोकचंद श्रीमाल ने किया। रात्रि में बेंगलूरु से आए संगीतकार कमलेश परमार ने सुंदर भक्ति कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

श्री महावीर जिनालय व दादावाड़ी, कन्याकुमारी में प्रतिष्ठा महोत्सव

कन्याकुमारी 4 जुलाई। श्री जैन तीर्थ संस्थान, रामदेवरा द्वारा संचालित श्री महावीर भगवान जिनालय व दादावाड़ी, कन्याकुमारी मूलनायक भगवान के दोनों तरफ प्राचीन वि.सं. 1544 के दो जिन बिम्ब श्री चन्द्रप्रभ भगवान व श्री नेमीनाथ भगवान, जिनकी प्रतिष्ठा का मुहूर्त पूज्य गुरुदेव मरुधरमणि खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने प्रदान किया। उनकी आज्ञानुसार वि.सं. 2076 आषाढ शुक्ला 2 दि. 4 जुलाई 2019 गुरुवार को बड़े हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

यह दोनों प्राचीन जिनबिम्ब संस्थान को श्री मोहनचंदजी प्रदीपकुमारजी ढड्ढा परिवार, चेन्नई-फलोदी द्वारा अपने संग्रहालय से भेंट प्राप्त हुए।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान की प्रतिष्ठा श्रीमान ललितकुमारजी दिलीपकुमारजी मेहता परिवार चेन्नई-जोधपुर ने करवाई। श्री नेमीनाथ भगवान की प्रतिष्ठा श्रीमान तिलोकचंदजी अजीतकुमारजी अभिनंदनजी गुलेच्छा परिवार चेन्नई-फलोदी ने करवाई। विधिविधान श्री सुरेन्द्रभाई पंडितजी, बेंगलोर वालो ने करवाया। प्रतिष्ठा हेतु खरतरगच्छाधिपतिश्री सहित चेन्नई में बिराजित पू. प्रवर्तिनी श्री निपुणाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पू. श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. व प्रखर व्याख्यात्री पू. हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या प्रियंवदाश्रीजी आदि ठाणा ने शुभाशीर्वाद व वासक्षेप प्रदान किया। चेन्नई से व आजु बाजु के नगरों से गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे व सभी ने बडे हर्ष से इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर, लाभ लेकर शासन की शोभा बढ़ाई। संस्थान ने इस परिसर में द्वितीय धर्मशाला का एक करोड़ की लागत से निर्माण करवाया है। इसका नामकरण का लाभ श्री जतनमलजी तिलोकचंदजी गुलेच्छा चेन्नई-फलोदी परिवार के श्री राजेन्द्रकुमार, दिलीपकुमार, अजितकुमार, विजयकुमार, प्रदीप, अभिनंदन, हेमन्त, विनय, मोक्ष गुलेच्छा परिवार ने लिया।

पर्युषण पर्व हेतु स्वाध्यायी तैयार

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद केन्द्रीय समिति द्वारा खानदेश की धन्यधरा धुलिया नगर में खरतरगच्छाधिपति पू. आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा एवं धवल यशस्वी साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन सानिध्यता में परिषद् के महामंत्री रमेश लुंकड़ के नेतृत्व में स्वाध्यायी शिविर आयोजित किया गया। शिविर में पूरे भारत वर्ष से स्वाध्यायी पधारे और भवोभव में जिनशासन की प्राप्ति हो अत: जिनशासन की सेवा एवं जिनवाणी की अभिवृद्धि का संकल्प लिया। शिविर का मुख्य उद्देश्य जिन संघ-क्षेत्रों में साधु-साध्वी भगवंतों के चातुर्मास नहीं है उन क्षेत्रों में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की आराधना स्वाध्यायियों द्वारा करवाना है। इसी के साथ में परमात्मा महावीर के जीवन को निकट से जानने एवं समझने का सुअवसर प्राप्त करना है। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश लूणिया, महामंत्री रमेश लुंकड, सहमंत्री ललित डाकलिया, कोषाध्यक्ष राजीव खजांची के साथ अनेक प्रदेशों के अध्यक्ष और राष्ट्रीय पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

तेजपुर में भव्यातिभव्य चातुर्मासिक प्रवेश

तेजपुर आसाम। पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. गणिनीपद विभूषिता गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की विदूषी सुशिष्या पू. आसाम प्रभाविका साध्वी प्रियस्मिताश्रीजी म.सा., पू. डॉ. साध्वी प्रियलताश्रीजी म.सा., पू. डॉ. साध्वी प्रियवंदनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 का तेजपुर नगर में भव्य चातुर्मास प्रवेश रहा। प्रवेश उत्सव पर संगीत की धूम मचाने प्रतिकभाई गेमावत मुम्बई से पधारे।

प्राकृतिक सौंदर्य की फिजाओं के हरे-भरे असम प्रान्त की राजधानी सिंहद्वारा के समीप तेजपुर नगर के इतिहास में पहली बार मूर्तिपूजक संघ की खरतरगच्छीया साध्वी प्रियस्मिताश्रीजी म. सा. आदि ठाणा का चातुर्मास श्री जैन श्वेतांबर गौड़ी पार्श्वनाथ मंदिर के तत्वावधान में भव्य प्रवेश रहा। अनेक भक्तों को आगमन हुआ, दिल्ली से अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के अध्यक्ष रतनजी बोथरा, सुरेशजी छाजेड़, कानपुर श्री संघ के अध्यक्ष सुबोधभाई, नौगांव से ललितजी कोठारी, राजसमुंद से बंशीलालजी, खारुपेटिया से बिमलेशजी कांकरिया, गुवाहाटी से श्रीसंघ सहित आसपास के क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाओं का आगमन रहा।

प्रवेश के दिन स्वामीवात्सल्य का लाभ प्रकाशजी राजेन्द्रजी बडेर परिवार ने लिया। प्रवेश के साथ साथ नं. 1. श्री जिनकुशलसूरि आराधना भवन, नं. 2. सुखसागरजी साधना कक्ष, नं. 3. कान्तिमणि प्रवचन मंडप, नं. 4. मणिधारी उपासना कक्ष, नं. 5. प्रेम सुलोचना साधना कक्ष का उद्घाटन हुआ। उसमें तेजपुरवासियों का उत्साह देखने जैसा था।

12 जुलाई के दिन जैन श्वेतांबर गौड़ी पार्श्वनाथ मंदिर में जिनशासन के प्रभावशाली प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी महाराज की 865वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष में मंदिर में सामूहिक दादागुरु इकतीसा जाप किया गया। दादा गुरुदेव के विषय में बोलते हुए डॉ. साध्वी प्रियलताश्रीजी म. सा. ने बताया- दादा गुरुदेव जिनशासन के महान उपकारी संत हुए जिन्होंने जिनशासन की जाहोजलाली में चार चांद लगाए, लाखों नूतन जैन बनाएं। ता. 14 जुलाई को नवनिर्मित जिनकुशलसूरि स्वाध्याय भवन के उद्घाटन के उपलक्ष में सामूहिक स्नात्र पूजा का आयोजन किया गया है।

पार्श्व नागेंद्र जैन टेम्पल का हुआ शिल्यान्यास

ब्रह्मर 20 जुलाई। श्री विघ्नहरा पार्श्वनाथ पद्मावती नागेन्द्र जैन टेम्पल का शिलान्यास समारोह कुशल पद्मावती सेवा न्यास के तत्वावधान में ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. सा. मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. एवं आर्यारत्ना साध्वी हेमरत्नाश्रीजी, साध्वी जयरत्नाश्रीजी, आदि ठाणा-3 के सानिध्य में प्रातः शुभमुर्हूत में शास्त्रोक्त विधि द्वारा संपन्न हुआ।

स्नात्र पूजा, नवग्रह पूजन, अष्ट मंगल पूजन, दश दिक्पाल पूजन के साथ मुख्य शिला व अन्य शिलाओं का अभिषेक मंत्रोच्चारों एवं जयकारों के बीच ओं पुण्याहं पुण्याहं प्रियन्तां प्रियन्तां के साथ क्रमश लाभार्थी परिवार द्वारा प्रार्थना पूर्वक स्थापित किया गया।

उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि इस ट्रस्ट के माध्यम से कमजोर वर्ग के लोगों को चिकित्सा, शिक्षा के लिये छात्रावास आदि अनेक मानव सेवा के कार्य किये जायेंगे। आगन्तुक सभी अतिथियों व लाभार्थी परिवारों का तिलक, माला, साफा, चुनरी, श्रीफल से कुशल पद्मावती सेवा संस्थान द्वारा बहुमान किया गया।

केयुप का चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन 21 सितम्बर को

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् (केयुप) एवं अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् (केएमपी) का दो दिवसीय संयुक्त चतुर्थ अधिवेशन परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की शुभ निश्रा में महाराष्ट्र के धुलिया नगर में आगामी 21 एवं 22 सितम्बर को होगा। अधिवेशन में केयुप की देशभर की 80 से अधिक शाखाओं के 1000 से अधिक प्रतिनिधिओं एवं सदस्यों के भाग लेने की सम्भावना है।

प्रतिवर्ष पूज्य गुरुदेव की निश्रा में गच्छ के युवाओं का अधिवेशन होता है जिसमें देशभर से हजारों युवा शिरकत करते है। केयुप की धुलिया शाखा के अध्यक्ष एवं अधिवेशन के संयोजक श्री जितेन्द्र टाटिया के नेतृत्व में उनकी पूरी टीम अधिवेशन की तैयारियों में जोर शोर से लगी है। देशभर से आने वाले समस्त युवा साथियों के आवास, भोजन आदि की उत्तमोत्तम व्यवस्था की जा रही है। इस हेतु सकल धुलिया संघ का पूर्ण सहयोग मिल रहा है।

अधिवेशन में सभी शाखाओं द्वारा अपने क्षेत्र में किये गए विभिन्न आयोजनों की जानकारी के साथ भविष्य के आयोजनों की रूप रेखा प्रस्तुत की जाएगी। केयुप एवं केएमपी संचालित ज्ञान वाटिका के बच्चों को पुरस्कृत किया जाएगा।

इस अधिवेशन के माध्यम से देशभर के खरतरगच्छ के युवाओं से मिलने एवं उनसे संवाद साधने का स्वर्णिम अवसर सभी को प्राप्त होता है।

ज्ञातव्य है कि महज 4 वर्ष पहले पूज्य गच्छाधिपतिजी की प्रेरणा से गठित इस युवा परिषद् ने अल्प समय में ही देशभर में 80 से अधिक शाखाएं स्थापित कर हजारों युवाओं को जोड़कर अपनी एक अलग पहचान कायम की है। परिषद् के उद्देश्यों में साधु साध्वीजी के विहार को सुगम बनाना, अधिक से अधिक स्वाध्यायी तैयार करना, ज्ञान वाटिका के माध्यम से बच्चों में धर्म संस्कारों का बीजारोपण करना, खरतरगच्छ की धरोहरों की सुरक्षा करना, गच्छ की युवाशक्ति को संगठित कर एक मजबूत संगठन का निर्माण करना आदि प्रमुख है।

–धनपत कानुंगो, राष्ट्रीय संयोजक (प्रसार प्रचार) केयुप

अहमदाबाद से शंखेश्वर पद यात्रा संघ

धूले 22 जुलाई। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में अहमदाबाद से श्री शंखेश्वर महातीर्थ के लिये छह री पालित पद यात्रा संघ का आयोजन होगा।

मूल सिणधरी वर्तमान में अहमदाबाद निवासी श्रीमती जसोदादेवी वंसराजजी मंडोवरा परिवार की ओर से इस संघ का आयोजन किया जा रहा है।

संघ में निश्रा प्रदान करने की विनंती लेकर मंडोवरा परिवार 400 से अधिक अपने परिवारजन, इष्ट मित्रजन आदि को लेकर पूज्यश्री की निश्रा में ता. 22 जुलाई 2019 को धूलिया पहुँचे और पूज्यश्री से भावभीनी विनंती की।

पूज्यश्री ने उनकी विनंती को द्रव्य क्षेत्र काल भाव आदि के आगार के साथ स्वीकार किया। और 16 दिसम्बर 2019 सोमवार का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। जिसे श्रवण कर मंडोवरा परिवार और सकल श्री संघ में परम आनंद व उल्लास का वातावरण छा गया। संघपति माला का विधान 25 दिसम्बर को होगा।

नेमीनाथ जन्मकल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया

जैसलमेर 4 अगस्त। सकन जैन श्रीसंघ चातुर्मास समिति, जैन ट्रस्ट, पार्श्व महिला मंडल के तत्त्वावधान में पूज्य गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ-सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि प्रवर श्री मयंकप्रभसागरजी म. एवं पूज्य आर्य मेहुलप्रभसागरजी म. की निश्रा में दि. 4 अगस्त को प्रात: 8:30 बजे महावीर भवन से अष्टप्रकारी पूजन सामग्री लेकर बाजते-गाजते नेमिनाथ भगवान का जयकार लगाते हुए दुर्ग स्थित पार्श्वनाथ जिनालय पहुँचकर नमिनाथ भगवान जन्म कल्याणक का महाअभिषेक महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया।

आर्य श्री मेहुलप्रभसागर महाराज ने संगीत की स्वरलहरियों के साथ मंत्रोच्चार के साथ विधि-विधान से नेमिनाथ भगवान का महाअभिषेक व महापूजन सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर मुनिश्री ने अभिषेक का महत्त्व समझाते हुए कहा कि वैराग्यकल्पलता ग्रंथ में कहा है कि परमात्मा का अभिषेक करने से रोग, शोक, आधि, व्याधि का नाश होता है। घर-परिवार में समाज व राष्ट्र में सुख-शांति-समृद्धि के साथ वांछित फल की प्राप्ति होती है।

नेमिनाथ भगवान के अभिषेक का लाभ श्रीमती शांतिदेवी धर्मपत्नी मोहनलालजी राजेशकुमार अर्जुनकुमार भंसाली परिवार, बरास पूजा का लाभ भगवानदासजी पुत्र राजू ललित महेन्द्र नरेन्द्र जिन्दाणी परिवार, केशर पूजा का लाभ श्रीमती धाईदेवी धर्मपत्नी कुन्दनमलजी नेमीचंदजी राखेचा परिवार, पुष्प पूजा का लाभ श्रीमती गुलाबबाई धर्मपत्नी सेठ आईदानजी महेन्द्रभाई जिनदत्त बापना परिवार, आरती मंगल दीपक का लाभ नेमीचंदजी बाबुलाल बागचार परिवार तथा संभवनाथ भगवान के अभिषेक का लाभ मूलचंदजी चंदूजी चोपड़ा परिवार, बरास केसर पूजा महेन्द्रभाई जिनदत बापना परिवार, इसी प्रकार मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान के अभिषेक का लाभ भगवानदास महेन्द्रकुमार तरूणकुमार जिन्दानी परिवार, आरती-मंगल दीपक का लाभ सुरेन्द्रकुमार, मोहितकुमार बापना परिवार ने लिया। सभी लाभार्थी परिवारों ने परमात्मा का चैत्यवन्दन व महाआरती के बाद अपने जीवन में सुकृत कार्य करने का संकल्प लिया।

इरा अवसर पर सकल जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष राजमल जैन, व्यवस्थापक विमल जैन, जैन पार्श्व महिला मण्डल, ओमप्रकाश राखेचा, शांतिलाल बम्ब, मोहनलाल बरडिया, ललित जिन्दानी, मनोज जिन्दानी, विजयसिंह कोठारी, पवन कोठारी, वीरेन्द्रकुमार राखेचा, सम्पत डूंगरवाल, गौरव राखेचा, मुख्य पुजारी बंटी शर्मा के साथ ही कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रेषक- महेन्द्रभाई बापना

बहुरंगी दीपावली पंचांग हेतु आवश्यक निवेदन

(2019-2020)

रतनमाला श्री प्रकाशन, जहाज मंदिर, माण्डवला 343042 जि. : जालोर (राज.)

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी जेबी पंचांग प्रकाशित होने जा रहे हैं।

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा तैयार किये जाते ये पंचांग हर दृष्टि से उपयोगी है। इनका उपयोग दीपावली बधाई कार्ड की तरह होता है। अन्य कार्ड वगैरह लम्बे समय तक उपयोग नहीं हो पाते। जबकि ये पंचांग साल भर तक उपयोगी होते है।

परमात्मा श्री महावीर स्वामी, श्री गौतम स्वामी, श्री दादा गुरूदेव, पूज्य आचार्यश्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा., श्री नाकोडा भैरव, श्री घंटाकर्ण महावीर, श्री अंबिका देवी, श्री पद्मावती माता आदि के रंगीन चित्रों के अलावा साल भर का तिथि पत्रक, दैनिक नक्षत्र, दैनिक चन्द्र, शुभ दिन, अमृत सिद्धियोग, बिछुडा, पंचक, गुलिक कालम्, यमगंड कालम्, राहुकालम् आदि, चौघडिया, पच्चक्खाण का समय, कल्याणक पर्व दिन, सुभाषित, साल भर के पर्व दिवस आदि अत्यन्त उपयोगी सामग्री से यह पंचांग सुसज्जित होता है।

कुल 48 पेज का यह पंचांग लघु आकार में मुद्रित होता है जो जेब में बहुत आराम से रह सकता है। पूरा पंचांग महंगे आर्ट पेपर पर बहुरंगों में प्रकाशित किया जाता है।

पृष्ठ वृद्धि के साथ कागज, छपाई, पोस्टेज आदि में काफी मूल्यवृद्धि होने के कारण पचांग के मूल्य में थोडा परिवर्तन करना पडा है। इस वर्ष पंचांग का मूल्य (8.00 रु.) आठ रूपये रखा गया है।

पंचांग प्रकाशन हेतु आदेश पत्र भिजवावें। 250 पंचांग के गणक में आदेश भेजा जा सकता है। इस वर्ष पूरा पंचांग रंगीन प्रकाशित होगा। आपका मेटर अंतिम कवर पेज पर रंगीन आयेगा। आप चाहे तो रंगीन फोटो भी छपवा सकेंगे। उसका कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं होगा।

पंचांग की राशि का ड्राफ्ट श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट के नाम से आई. सी. आई. सी. आई. जालोर शाखा (***IFSC CODE - ICIC0000653***) खाता नं. 065301000256 पर देय बनवाकर ट्रस्ट कार्यालय को शीघ्र भिजवावें, बैंक रसीद की छाया प्रति के साथ हमें भारतीय डाक से सूचना दें (माण्डवला में कोरियर सेवा उपलब्ध नहीं हैं।)

पंचांग प्रकाशन हेतु आदेश पत्र पूज्य गुरूदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. अथवा ट्रस्ट कार्यालय मांडवला को शीघ्र भेजने की कृपा करें।

पंचांग प्रकाशन हेतु संपर्क सूत्र

पूज्य गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

श्री अग्रवाल विश्राम भवन
नदी किनारे
पो. धुलिया - 424002 (महा.)
फोन - मुकेश : 79871-51421, व्हाट्सप - 098251 05823
E-mail : jahajmandir99@gmail.com

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मन्दिर, माण्डवला–343042, जि. : जालोर (राज.)
फोन : 02973–256107, 256192
डॉ. यू. सी. जैन : 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

हमारे पंचांग कुल [ ] प्रकाशित करावें। पंचांग में प्रकाशित करने हेतु मेटर इस प्रकार है।

एक पृष्ठ का मैटर

कृपया पंचांग हमें इस पते पर भिजवाये –

भेजने के पते में मोबाईल नं., फोन नं.
एवम् पीनकोड़ अनिवार्य रुप से लिखे

हस्ताक्षर

लिफाफे का मेटर

यदि लिफाफे नहीं चाहिये अथवा
कम चाहिये तो स्पष्ट रुप से लिखे।

आपके पते पर किस कोरियर की व्यवस्थित सेवा हैं यदि उसका नाम एवं फोन, मोबाईल नं. भी भेज सके तो प्रेषण में सहयोग रहेगा।

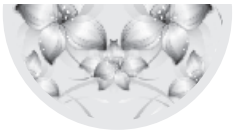

जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संरक्षक

श्री लालचन्दजी कानमलजी गुलेच्छा, अक्कलकुआं
श्री राजेन्द्रकुमार राणुलालजी डागा, अक्कलकुआं
श्री भंवरलालजी हस्तीमलजी कोचर, अक्कलकुआं
श्री ज्ञानचन्दजी रामलालजी लूणिया, अजमेर
श्री पूनमचन्दजी नैनमलजी मरड़िया, डंडाली- अहमदाबाद
श्री माणकमलजी मांगीलाल नरेशकुमारजी धारीवाल, चौहटन-अहमदाबाद
श्री विनोद शर्मा पुत्र श्री घनश्यामप्रसाद शर्मा, सोमपुरा, आगरा
श्री जगदीशचन्द, नितेश कुमारजी छाजेड़ (हरसाणी-बाड़मेर) हाल इचलकरंजी
श्री देवीचंदजी छोगालालजी वडेरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी ओमप्रकाशजी पारसमलजी छाजेड़, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री संपतराजजी लूणकरणजी संखलेचा, बाड़मेर- इचलकरंजी
श्री मांगीलालजी खीमराजजी छाजेड़, रामसर- इचलकरंजी
श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़, हरसाणी वाले इचलकरंजी
श्री ओमप्रकाशजी मुलतानमलजी वैद मुथा कवास वाले, इचलकरंजी
श्री छगनलालजी देवीचंदजी मेहता, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अशोककुमारजी सुरतानमलजी बोहरा, भिंयाड़-इचलकरंजी
श्री मिश्रीमलजी विजयकुमार रणजीत ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री शिवकुमार रिखबचंदजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
स्व. रूपसिंहजी मदनसिंह रतनसिंह राजपुरोहित-इचलकरंजी
श्री फरसराजजी रिखबदासजी सिंघवी, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री हीराचंदजी मांगीलालजी बागरेचा, सिवाना-इचलकरंजी
शा. मोतीलाल एण्ड सन्स, इचलकरंजी
श्री प्रवीणकुमार पृथ्वीराजजी ललवानी, इचलकरंजी
श्री पुखराजजी आसुलालजी बोहरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री पुखराजजी सरेमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री भीखचंदजी सुमेरमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी कन्हैयालालजी भूरचंदजी मालू, हरसाणी-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी रमेश अशोक लूंकड़ मोकलसर-इचलकरंजी
श्री रिषभलाल मांगीलालजी छाजेड़, इंचलकरंजी
शा. पीरचंद बाबुलाल एण्ड कं., बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अरूणकुमारजी बापूलालजी डोसी, इन्दौर
श्री टीकमचन्दजी हीराचन्दजी छाजेड़, उज्जैन
डॉ. यू.सी. जैन अजयजी संजयजी लषितजी पार्थ जैन, उदयपुर
श्री फतेहलालजी सुल्तानजी लक्ष्मणजी आजादजी संजयजी सिंघवी, उदयपुर
श्री मोहनसिंहजी पुत्र राजीव पौत्र चिराग दलाल, सुराणा, उदयपुर
श्री सुधीरजी चावत, उदयपुर
श्री किरणमलजी सावनसुखा, उदयपुर
श्रीमती शान्ति मेहता ध.प.श्री विजयसिंहजी मेहता, उदयपुर
श्री दौलतसिंहजी प्रतापसिंहजी गॉधी, उदयपुर
श्री शंकरलालजी बाफना, उदयपुर
श्रीमती शांतादेवी जुहारमलजी गेलड़ा, उदयपुर
श्री नगराजजी पवनराजजी अशोककुमारजी मेहता, उदयपुर
श्री बलवन्तसिंहजी करणसिंह सुरेन्द्रसिंह पारख, उदयपुर
श्री मीठालालजी मनोजकुमार गुणेशमलजी भंसाली, उम्मेदाबाद-बैंगलोर
श्री दिलीपजी छाजेड़, खांचरोद-उज्जैन
श्री कुरीचन्दजी चन्दनमलजी मलासिया, ऋषभदेव
शा. कांतिलालजी पारसमलजी कागरेचा, ओटवाला
श्रीमती शांतिदेवी जुगराजजी पंचाणमलजी मरडिया, चितलवाना-कारोला-मुंबई
घोड़ा श्री सुमेरमलजी मोतीलालजी बाबूलालजी श्रीश्रीमाल, केशवणा
श्री रामरतनजी नरायणदासजी छाजेड़, केशवणा- डोम्बीवल्ली
श्री लक्ष्मीचन्दजी केसरीमलजी चण्डालिया, कोटा
श्री पन्नालालजी महेन्द्रसिंहजी गौतमकुमारजी नाहटा, कोलकात्ता-दिल्ली
श्री जगदीशकुमार खेताजी सुथार, कोलीवाड़ा
श्री प्रेमचन्दजी संतोकचन्दजी गुलेच्छा, खापर
सौ. रूपाबाई गुलाबचन्दजी चौरड़िया, खापर
श्री पारसमलजी मांगीलालजी लूणावत, खेतिया
श्री प्रमोदकुमारजी, बंशीलालजी भंसाली, खेतिया
श्री किशनलालजी हसमुख कुमार मिलापजी भंसाली, खेतिया

श्रीमती मानकुँवरबाई गेनमलजी भंसाली, खेतिया-नासिक
श्री नेवलचन्दजी मोहनलालजी जैन, गाजियाबाद
शा. मुलतानमलजी भवंरलालजी नाहटा, गांधीनगर
मिस्त्री मोहनलाल आर. लोहार, पो. चांदराई जि.जालोर
शा. जांवतराजजी भीमराजजी मोहनलालजी गांधी, चितलवाना
श्री लाधमलजी मावाजी मरड़िया, चितलवाना
श्री सुरेशकुमार हिन्दूमलजी लूणिया, धोरीमन्ना-चैन्नई
श्री हीराचंदजी बबलसा गुलेच्छा, टिंडीवनम-चैन्नई
शा. डूंगरचंदजी यशकुमारजी ललवानी, सिवाना-चैन्नई
श्री कन्हैयालालजी सुभाषचंदजी नरेशचंदजी रांका, चैन्नई
शा. समरथमलजी सोनाजी रांका, उम्मेदाबाद-चैन्नई
श्री सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया, चैन्नई
श्री पदमकुमारजी प्रवीणकुमारजी टांटिया, जोधपुर-चैन्नई
शा. गिरधारीलालजी बादरमलजी संखलेचा, पादरू-चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी प्रकाशचंदजी लोढ़ा, चैन्नई
श्री पदमचंदजी दिनेशकुमारजी कोठारी, चैन्नई
मै. एम. के. कोठारी एण्ड कम्पनी, चैन्नई
श्री वीरेन्द्रमलजी आशीषकुमार मेहता वडपलनी-चैन्नई
श्री एस. मोहनचंदजी ढ़ड्ढा, चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी मूलचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
श्री माणकचंदजी धर्मचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
शा. लालचन्दजी कान्तीलालजी छाजेड़, गढ़सिवाना-चैन्नई
श्रीमती इचरजबाई मिलापचंदजी डोसी, चैन्नई
एम. नरेन्द्रकुमारजी कवाड़, चैन्नई
श्री नेमीचंदजी राजेशकुमारजी कटारिया, चैन्नई
श्री आर. मफतलाल, सौभागबेन चन्दन, चैन्नई
श्री बाबूलालजी हरखचन्दजी छाजेड़ (सी.टी.सी.), चेन्नई
शा. जेठमलजी आसकरणजी गुलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
मै. राखी वाला, चैन्नई
श्री द्वारकादासजी पीयुष अनिल भरत महावीर डोशी, चौहटन
श्री महताबचन्दजी विशालकुमारजी बांठिया, जयपुर-मुंबई
श्री जसराज आनन्दकुमार चौपड़ा, जयपुर
शा. प्रकाशचंदजी विजयचंदजी लोढ़ा, जयपुर
श्री जुगराजजी(सी.ए.) कैलाशजी दिनेशजी चौधरी, जालोर- भायंदर
श्री विमलचंदजी सौ. मेमबाईसा सुराणा, जयपुर
श्री किशनचन्दजी बोहरा सौ. सुधादेवी, जयपुर
श्री कनकजी श्रीमाल, जयपुर
श्री महावीरजी मुन्नीलालजी डागा, जयपुर
श्रीमती जतनबाई ध.प. स्व. मेहताबचंदजी गोलेछा, जयपुर
श्रीमती सरोज फतेहसिंहजी सिद्धार्थजी बरड़िया, जयपुर
श्री रूपचन्दजी नरेन्द्र देवेन्द्र नमनजी भंसाली, हालावाले-जयपुर
श्री दुलीचन्दजी, धर्मेशकुमारजी टांक, जयपुर
श्री महरचन्दजी मनोजकुमारजी धांधिया, जयपुर
श्री मनमोहनजी अनुपजी बोहरा, जयपुर
श्री जितेन्द्रजी नवीन अजय नितीन महमवाल-श्रीमाल, जयपुर
श्री राजेन्द्रकुमारजी संजयजी संदीपजी छाजेड़, जयपुर
श्री इन्द्रचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी ज्ञानचन्दजी भण्डारी, जयपुर
श्री विमलचन्दजी महावीरचन्दजी पंसारी, जयपुर
श्री पारसमलजी पंकजकुमारजी गोलेछा, जयपुर
श्री शांतिचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी पुंगलिया, जयपुर
श्री हुकमीचन्दजी विजेन्द्रजी पूर्णेन्द्रजी कांकरिया, जयपुर
श्री ताराचन्दजी विजयजी अशोकजी राजेन्द्रजी संचेती, जयपुर
श्री भीमसिंहजी तेजसिंहजी खजांची, जयपुर
श्री सौभागमलजी ऋषभकुमारजी चौधरी, जयपुर
श्री संतोषचन्दजी विजयजी अजयजी झाड़चूर, जयपुर
श्री रतनलालजी अतुल अमित श्रीश्रीमाल हालावाले जयपुर
श्री माणकचन्दजी राजेन्द्रजी ज्ञानचन्दजी गोलेछा, जयपुर
श्री उमरावचन्दजी प्रसन्नचन्दजी किशनचन्दजी डागा, जयपुर
श्री अभयकुमारजी अशोककुमार अनूपकुमार पारख-जयपुर
श्री त्रिलोकचन्दजी प्रेमचन्दजी सिंघी, जयपुर
श्री घनश्यामदास दीपककुमारजी पारख, हालावाले जयपुर
श्री सुरेन्द्रमलजी गजेन्द्रजी धर्मेन्द्रजी पटवा, जालौर
संघवी शा. अशोककुमारजी मानमलजी गुलेच्छा, जीवाणा- चैन्नई
श्री भंवरलालजी, बाबूलालजी पारख, जीवाणा
संघवी कानमलजी बाबूलालजी नेमीचंदजी अशोकजी गोलेछा, जीवाणा-चेन्नई
श्री खीमचन्दजी अशोककुमारजी कंकूचौपड़ा, जीवाणा- बैंगलोर
श्रीमती प्रेमलताजी श्री चन्द्रराजजी सिंघवी, जोधपुर
श्री गोविन्दचन्दजी राजेशजी राकेशजी मेहता जोधपुर-मुम्बई
श्री लक्ष्मीचन्द हलवाई पुत्र श्री जेठमलजी अग्रवाल, जोधपुर
श्री लूणकरणजी घीसुलालजी सौ. चन्द्रादेवी सेठिया, तलोदा
श्रीमती इन्द्रा महेशजी जैन नाहटा नई दिल्ली
श्री बी.एम. जैन लक्ष्मीनगर, दिल्ली
श्री घनश्यामदासजी नवीनजी सुशीलजी सुनीलजी जैन, नई दिल्ली
श्री शांतिलालजी जैन दफ्तरी, नई दिल्ली
श्री शीतलदासजी विरेन्द्रकुमारजी राक्यान, नई दिल्ली
श्री ज्ञानचन्दजी महेन्द्रकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री पवित्रकुमारजी सुनीलजी, गुनीतजी बाफना, कोटा-नई दिल्ली
श्री अरुणकुमारजी हर्षाजी हर्षावत, नई दिल्ली
श्री राजकुमारजी ओमप्रकाशजी रमेशकुमारजी चौरड़िया, नई दिल्ली
श्री मोतीचन्दजी श्रीमती आभादेवी पालावत, नई दिल्ली
श्री विरेन्द्रजी राजेन्द्रजी अभिषेकजी आदित्यजी पीयूषजी मेहता, दिल्ली

श्री रिखबचंदजी राहुलकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री अशोककुमारजी श्रीमती चंदादेवी जैन, नई दिल्ली
श्रीमती नीलमजी सिंघवी, नई दिल्ली
श्रीमती विजयादेवी धीरज बहादुरसिंहजी दुग्गड़, नई दिल्ली
श्री शांतिप्रकाशजी अशोककुमार प्रवीण सिंधड़, अनूपशहर, नई दिल्ली
श्रीमती भारतीबेन शांतिलालजी चौधरी, नई दिल्ली
श्री सुमेरमलजी मिश्रीमलजी बाफना, मोकलसर-दिल्ली
श्री चन्द्रसिंहजी विपुलकुमारजी सुराणा, दिल्ली
श्री प्रकाशकुमारजी प्रेणितकुमारजी नाहटा, जसोल-दिल्ली
शा. महेशकुमारजीर विरधीचंदजी गांधी, धोरीमन्ना
श्रीमती भंवरीदेवी गोरधनमलजी प्रतापजी सेठिया, धोरीमन्ना
संघवी मुथा चन्दनमलजी महेन्द्र नरेन्द्र तातेड़, पादरू-नंदुरबार
श्री भँवरलालजी ललित राजु कैलाश गौतम संखलेचा, पादरू- चैन्नई
श्री मूलचंदजी बख्तावरमलजी बाफना हीराणी, पादरू
संघवी श्री पूनमचंदजी पुखराजजी छाजेड़, पादरू-मुम्बई-चैन्नई
श्री भंवरलालजी नेमीचन्दजी कटारिया, पादरू
श्री रूपचन्द जवेरीलालजी गोलेछा ढालूवाले, पादरू
मेहता शा. पुखराज सुमेरमलजी तातेड़, पादरु-सेलम
श्री बाबूलालजी शर्मा, राकांवत डेकोरेटर्स, तखतगढ़-पाली
शिल्पी श्रवणकुमार सुरताजी प्रजापति,गोदावरी मार्बल, पिण्डवाड़ा
श्री रतनचन्दजी सौ. निर्मलादेवी बच्छावत, फलोदी
श्री रमेशचन्दजी सुशीलकुमारजी बच्छावत, फलोदी
श्री मनोहरमलजी दलपतकुमार महेश हरीश नाहटा, हालावाले फालना
श्री खूबचन्दजी चन्दनमलजी बोहरा, हालावाले फालना
श्री मोतीचन्दजी फोजमलजी झाबक, बड़ौदा
श्री चम्पालालजी झाबक परिवार, बड़ौदा
श्री आसुलालजी मांगीलालजी बाबूलालजी डोशी, चौहटन-बाड़मेर
श्री चिन्तामणदासजी, तगामलजी बोथरा, बाड़मेर
श्री रिखबचंदजी प्रकाशचन्दजी सेठिया, चौहटन-बाड़मेर
श्री रतनलालजी विनोदकुमार गौतमकुमार बोहरा, हालावाले, बाड़मेर
श्री आसूलालजी ओमप्रकाशजी संकलेचा, बाड़मेर
श्री रामलाल, महेन्द्र, भरत, धवल मालू, डाकोर-बाडमेर
श्री जगदीशचन्द देवीचन्दजी भंसाली, बाड़मेर-पाली
श्री शंकरलाल केशरीमलजी धारीवाल, बाड़मेर
श्री बाबूलाल भगवानदासजी बोथरा, बाड़मेर
शा. मनसुखदास नेमीचंदजी पारख, हरसाणीवाला, बाड़मेर
शा. सुरेशकुमार पवनकुमार मुकेशकुमार पुत्र श्री शंकरलाल बोहरा, बाड़मेर
श्री मुन्नीलालजी जयरूपजी नागोत्रा सोलंकी, बालवाड़ा
शा. अमृतलालजी पुखराजजी कटारिया सिंघवी बालोतरा- मुंबई
श्री उत्तमराजजी पारसकंवर सिंघवी, बिजयनगर
श्री सम्पतराजजी सपनकुमारजी गादिया, पाली बैंगलौर
श्री पुखराजजी हस्तीमलजी पालरेचा, मोकलसर-बैंगलोर
शा. घेवरचंदजी शंकरलालजी साकरिया, सांडेराव-बैंगलोर
श्री आनन्दकुमारजी कांतिलाल प्रकाशचन्दजी चौपड़ा, हालावाले बैंगलोर
श्री वरदीचंदजी पंकजकुमारजी महावीरकुमारजी बाफना, बैंगलोर
संघवी श्री पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा, मोकलसर- बैंगलोर
श्री राजेन्द्रकुमारजी तिलोककुमारजी बोथरा, बैंगलोर
श्री छगनलालजी शांतिलालजी लूणावत, शांतिनगर बैंगलोर
शा. सज्जनराजजी रतनचंदजी मुथा, बैंगलोर
श्री तेजराजजी मनोजकुमारजी आनन्दकुमारजी मालाणी, मोकलसर-बैंगलोर
शा. मूलचन्दजी किरण अरूण विक्रम पुत्र पौत्र मिश्रीमलजी भंसाली, सिवाना-बैंगलोर
श्री भंवरलालजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री पारसमलजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री जुगराजजी घेवरचंदजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री कन्हैयालालजी ओटमलजी छगनलालजी सुजाणी रांका, बैंगलोर
श्री गेनमलजी हरकचंदजी लूणिया, बैंगलोर
श्री मोटमलजी कानमलजी सदानी, बैंगलोर
संघवी शा. मांगीलालजी भरतमलजी, बैंगलोर
श्री पी. एच. साह, बैंगलोर
श्री विनोदकुमारजी पारख, बैंगलोर
श्री माणकचंदजी, गौतमचंदजी चौपड़ा, ब्यावर
श्री संजयकुमारजी, कनिष्ठकुमारजी बरडिया, ब्यावर
श्री ओमप्रकाशजी राजेशजी (ओमजी दवाईवाला), ब्यावर
श्री उगमराजजी सुरेशकुमारजी मेहता, ब्यावर
सेठ श्री शंभुमलजी बलवन्तजी यशवंतजी रांका, ब्यावर
श्री मदनलालजी दीपचंदजी कोठारी, ब्यावर
श्री कुशलचंदजी पारसकुमारजी सतीशकुमारजी मेड़तवाल, ब्यावर
श्री शांतिलालजी सज्जनराजजी कुशलराजजी ऋषभ तातेड़-गडवानी, ब्यावर
श्री कानसिंहजी मधुसूदन सुदर्शन संजय चौधरी कोठियां, भीलवाड़ा
श्री जीवनसिंहजी दीपककुमार राजेशकुमारजी लोढ़ा, गुरलां-भीलवाड़ा

श्री प्रेमसिंहजी राजेन्द्रकुमार नरेन्द्रकुमारजी बोहरा गुरलां-भीलवाड़ा
श्री भंवरलालजी बलवन्तसिंहजी मेहता, गुरलां-भीलवाड़ा
शा. भीकचंदजी धनराजजी देसाई, सिणधरी-मल्हारपेठ
संघवी श्री हंसराजजी रमेशजी सुरेशजी पुत्र श्री मोहनलालजी मूथा मांडवला
शा. मोहनलालजी किरण दिनेश प्रवीण पुत्र पौत्र शा. बस्तीमलजी, मांडवला
मूथा शा. नेनमलजी पन्नालालजी सोनवाड़िया, मांडवला
श्री पारसमलजी भानमलजी छाजेड़, मांडवला-मुम्बई
श्रीमती पुष्पाजी ए., केतनजी चेतनजी जैन पाली-मुम्बई
श्री मोतीलालजी ओसवाल, पादरू-मुम्बई
श्री अतुलजी हनवंतचन्दजी भंसाली, जोधपुर-मुम्बई
श्री महेन्द्रकुमारजी शेषमलजी दयालपुरा वाले, मुम्बई
श्री कन्हैयालालजी भगवानदासजी डोसी-मुम्बई
श्री रिखबचन्दजी जैन, मुम्बई
शा. अनिल रणजीतसिंहजी पारख, जोधपुर-मुंबई
श्रीमती टीपूदेवी कालुचंदजी, बदामीदेवी अरविंदजी श्रीश्रीश्रीमाल सांचौर-मुंबई
शा. भंवरलालजी कमलचन्द रिषभ गुलेच्छा, मुम्बई
श्री बाबुलालजी सुमेरमलजी, मुंबई
श्रीमती सुआदेवी उदयचंदजी नाथाजी, जीवाणा-मुंबई
श्री जितेन्द्र केशरीमलजी सिंघवी, मुंबई
श्री रमेश सागरमलजी सियाल, मुंबई
श्री गौतमचंद डी. भंसाली, मुंबई
शा. सागरमलजी फूलचंदजी सियाल, मुंबई
श्रीमती मथरीदेवी शांतिलालजी वाघेला, सांचौर-मुंबई
श्री मोहनलालजी केवलचंदजी छाजेड़, डुठारिया-मुंबई
श्री चतुर्भुजजी विजयराजजी श्रीश्रीमाल, फालना-मुंबई
श्री भंवरलालजी विरदीचन्दजी छाजेड़, हरसाणी-मुंबई
श्री वंसराजजी मिश्रीमलजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर
श्री मीठालालजी अमीचंदजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर
श्री किस्तुरचन्दजी छगनलालजी चौपड़ा, रतलाम
श्री मदनलालजी रायचन्दजी शंखलेशा, रामा-कल्याण
श्री अनूपचन्दजी अनिल अशोक अजय कोठारी, रायपुर
श्री नेमीचन्दजी श्यामसुन्दरजी बेदमुथा, रायपुर
श्री उमेशकुमारजी मुकेशकुमारजी तातेड़, रायपुर
स्व. हस्तीमलजी छोगाजी हिरोणी, रेवतडा-चेन्नई
श्री नथमलजी भंवरलालजी सौ. किरणदेवी पारख, लोहावट
श्रीमती शांताबेन हरकचन्दजी बोथरा, सांचौर
श्री कानूगो प्रकाशमलजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
श्री मूलचंदजी मिश्रीमलजी बुर्ड, सांचौर-मुम्बई
श्री धुडचंदजी रतीलालजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर-मुम्बई
श्री रावतमल सुखरामदास कमलेश विमल धारीवाल चौहटन-सांचौर
श्री मिश्रीमलजी चन्दाजी मरड़िया, सांचौर
स्व. दाड़मीदेवी श्री पुखराजजी बोथरा, सांचौर
श्री हरकचन्दजी सेवन्तीजी जितेन्द्र विनोद राजेश शाह, सांचौर
शा. प्रकाशंचद पारसमलजी छाजेड़, सांचौर
श्री सुमेरमलजी पुखराजजी बोथरा, सांचौर-हैदराबाद
श्री दिलीपकुमारजी जांवतराजजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर- मुंबई
श्री जुगराजजी रमेशजी उत्तमजी महेन्द्रजी छाजेड़ सिवाना- मदुराई
श्रीमती सुखीदेवी श्री भीमराजजी बादरमलजी छाजेड़, सिवाना-पूना
श्री पारसमलजी चंपालालजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री प्रकाशकुमार अंकितकुमारजी जीरावला, सूरत
श्री इन्द्रचन्दजी गौतमचन्दजी चौपड़ा, बिलाड़ा-हैदराबाद
श्री माणकचंदजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री बाबूलालजी मालू-सूरत
श्री प्रेमचंदजी गेमरमलजी छाजेड़-बाड़मेर-सूरत
शा. पारसमलजी शेरमलजी गोठी, डांगरीवाला-सूरत
श्री मोहनलालजी हरखचंदजी गुलेच्छा, विजयवाड़ा
श्रीमती जतनदेवी सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, हावड़ा
श्री भीकमचन्दजी बाबूलालजी तोगमलजी गोलेछा, पादरू-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी प्रकाशचंदजी चौपड़ा, बिलाडा-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी उत्तमचंदजी चौपड़ा, हैदराबाद
श्री गौतमचन्दजी मीनादेवी सौरभ, सुलभ कोठारी,रायपुर (छ.ग.)
श्रीमती सुरजदेवी गुलाबचन्दजी मुणोत, रायपुर (छ.ग.)
श्री भूरमलजी नवलखा राजनांद गांव (छ.ग.)
श्री संजयजी सिंघी, राजनांद गांव (छ.ग.)
श्री हस्तीमलजी अभिषेक कुमार धारीवाल, बाड़मेर
-श्री जसराज राणुलालजी कोचर, अक्कलकुआ
-श्री मेघराजजी तेजमलजी ललवानी, अक्कलकुआ
-श्री पुण्यपालजी अनिलजी सुनीलजी सुराणा, इन्दौर
-श्री गेंदमल पुखराजजी चौपड़ा, उज्जैन
-श्री रतनचन्द जयकुमार जिनेन्द्रकुमार चौपड़ा, उज्जैन
-श्री पारसमलजी वी. जैन, सांचौर-बडोदरा
-श्री धवलचन्दजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
-श्री पारसमलजी हंजारीमलजी बोहरा, सांचौर
-श्री चुन्नीलालजी मफतलालजी मरड़िया, सांचौर-सूरत
-श्री गौतमचन्दजी राजमलजी डूंगरवाल, देवड़ा-सूरत
-श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू, बाड़मेर-सूरत
-शा. जुगराजजी मिश्रीमलजी तलावट, उम्मेदाबाद-सेलम
-श्री कन्हैयालालजी मुकेशकुमारजी, सोमपुरा, लुणावा

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर के घर उसके दूर के रिश्ते के चाचा आये हुए थे। जलपान करने के उपरान्त समय-निर्गमन करने हेतु वार्तालाप कर रहे थे।

उन्होंने जटाशंकर से पूछा- क्या करते हो!

जटाशंकर ने जवाब दिया- जी! दुकान चलाता हूँ।

चाचाजी ने फिर पूछा- कैसी चलती है दुकान!

जटाशंकर ने कहा- चाचाजी! कभी अच्छी चलती है... कभी बिल्कुल नहीं चलती।

चाचाजी बोले- जिस दिन नहीं चलती। उस दिन तुम क्या करते हो... क्या सोचते हो...!

जटाशंकर बोला- उस दिन बहुत परेशान हो जाता हूँ। तनाव में आ जाता हूँ।

चाचाजी ने कहा- अपना टेंशन दूर करने के लिये क्या करते हो! कुछ पुस्तक वगैरह पढ़ते हो!

जटाशंकर बोला- उस दिन मंदिर चला जाता हूँ।

चाचाजी बडे प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा- बहुत अच्छा करते हो। भगवान के दर्शन करने से तनाव दूर हो जाता है। कितनी देर भगवान के पास रहते हो!

जटाशंकर बोला- जी! मैं मंदिर में भगवान के दर्शन करने नहीं जाता। मैं तो वहाँ जाकर दर्शनार्थियों के बाहर पड़े चप्पलों की जोडियों को अलग-अलग कर देता हूँ।

चाचाजी बडे हैरान हुए। ऐसा करने से तुम्हें क्या फायदा!

जटाशंकर बोला- चप्पलों को इधर-उधर करने के बाद मैं एक किनारे खडा हो जाता हूँ। फिर लोगों को देखता रहता हूँ। वे लोग अपना चप्पल ढूंढते रहते हैं। नहीं मिल पाने के कारण बडे परेशान हो जाते हैं। उनकी परेशानी को देखकर मेरी परेशानी दूर हो जाती है। मैं तनाव-मुक्त हो जाता हूँ।

इस दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अपना तनाव दूर करने के बजाय दूसरों को तनावग्रस्त करने की योजना बनाते हैं और उसी में संतुष्टि का अनुभव करते हैं। दूसरों को तनाव में देख कर अपना तनाव भूल जाते हैं। अपने बारे में सोचना है कि कहीं मेरा स्वभाव ऐसा तो नहीं है।

धुलिया चातुर्मास कार्यक्रम

दि. 26 अगस्त से 2 सितम्बर 2019 पर्युषण महापर्व

दि. 21 सितम्बर 22 सितम्बर 2019 को अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् एवं
अ. भा. खरतरगच्छ महिला परिषद् का अधिवेशन

दि. 26 सितम्बर से 19 अक्टूबर 2019 सूरि मंत्र चतुर्थ-पंचम पीठिका मौन महासाधना

दि. 20 अक्टूबर 2019 प्रातः नौ बजे सूरि मंत्र महापूजन तथा महामांगलिक

इचलकरंजी में चातुर्मास प्रवेश

मोकलसर में चातुर्मास प्रवेश एवं आराधना भवन उद्घाटन

अहमदाबाद में चातुर्मास प्रवेश

भिवण्डी में चातुर्मास प्रवेश

बैंगलोर में चातुर्मास प्रवेश

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

ब्रह्मसर में चातुर्मास प्रवेश

सांचोर में चातुर्मास प्रवेश

बीकानेर में चातुर्मास प्रवेश

गिरनार में चातुर्मास प्रवेश

फलोदी में चातुर्मास प्रवेश

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408